संडे स्कूल पाठ्य पुस्तक

1

प्रकाशक :

ब्रदरन संडे स्कूल समिति

- **Brethren Sunday School**
  Text Book-1 (Hindi)

- **All Rights Reserved**

- *Original Text Books Published in Malayalam and English by :*
  The Brethren Sunday School Committee, Kerala

- *Project Co-Ordinator :*
  Jacob Mathen

- *Language Consultant :*
  Dr. Johnson C. Philip

- *Translated by :*
  Dora Alex (Delhi)

- *Copies Available From :*
  *** SBS Camp Centre, Puthencavu,**
  Chengannur, Kerala

  *** Brethren Sunday School Committee**
  P.B. No. 46, Pathanmthitta, Kerala

- *Printed, Published and Distributed By :*
  The Brethren Sunday School Committee

प्रस्तावना

आरंभकाल से ही ब्रदरन विश्वासी लोग अपने बच्चों को परमेश्वर का वचन सिखाने को काफी महत्व देते आये हैं। जैसे ही कोई बच्चा 'मम्मी' या 'पापा' बोलने लगता है वैसे ही उसे घर वाले ''यहोवा मेरा चरवाहा है'' जैसी छोटी बाइबल आयतें सिखाना शुरू कर देते हैं, जैसे ही वह नर्सरी में जाने लगता है वैसे ही उसे संडे स्कूल भी भेजना शुरू हो जाता है।

भारत में ब्रदरन मंडलियों की संख्या जब बढ़ने लगी तब कई भाईयों को लगा कि सभी मंडलियों के लिये उपयोगी एक संडे स्कूल पाठ्यक्रम बनाया जाना चाहिये। इस विषय में तत्पर काफी सारे भाईयों ने कई साल पहले **पत्तनमथिट्टा** नामक स्थान पर गास्पल हाल में एकत्रित होकर **''ब्रदरन संडे स्कूल पाठ्यक्रम''** की नींव डाली। अगले कुछ सालों में उन लोगों ने कुल दस कक्षाओं का पाठ्यक्रम मलयालम भाषा में तैयार किया और तब से मलयालमभाषी मंडलियों में इनका व्यापक उपयोग होता आया है।

इस बीच कई भाई-बहनों, मंडलियों एवं **SBS India** की मदद से इन पुस्तकों का अनुवाद अंग्रेजी एवं कई भारतीय भाषाओं में हुआ जिसके कारण इन पाठ्यपुस्तकों का उपयोग और भी व्यापक हो गया। हिंदीभाषी मंडलियों की व्यापकता के कारण हिन्दी संस्करण का सारे भारत में स्वागत हुआ। इस बीच हर जगह से मांग आने लगी कि जल्दबाजी में किये गये हिंदी अनुवाद को अब संशोधित किया जाये। इस मामले में भाई **जेकब मात्तन** ने काफी व्यक्तिगत दिल्चस्पी लेकर यह कार्य बहिन **डोरा एलेक्स** को सौंपा। पुराने अनुवाद का संशोधन करने के बदले यह बहिन सारे दसों पाठ्य पुस्तकों का नया एवं आधुनिक बोलचाल की हिंदी में अनुवाद कर रही हैं। इस कार्य को **ब्रदरन संडे स्कूल समिति**

एवं **SBS India** का पूर्ण अनुमोदन प्राप्त है। बहिन **डोरा एलेक्स** ने अभी तक जितने पुस्तकों का अनुवाद किया है उन सबका मैंने अवलोकन किया एवं उनको बहुत ही सरल, सुलभ एवं सटीक पाया है, मैं इस कार्य के लिये उनका एवं भाई **जेकब मात्तन** का अभिनंदन करता हूँ।

मनुष्य जन्म से ही पापी होता है, नया जन्म पाने के बाद उसे कई साल तक परमेश्वर का वचन सिखाया जाना जरूरी है जिससे कि उसका मन रूपांतर पाकर (रोमियों 12:1, 2) वह सही रीति से सोचने लगे। मुझे पूरा यकीन है कि इस महान कार्य के लिये **ब्रदरन संडे स्कूल पाठ्यक्रम** एकदम उचित माध्यम है। हिंदी के नये संस्करण के छपने से हिंदीभाषी मंडलियों को बच्चों एवं नये विश्वासियों के प्रति अपनी आत्मिक जिम्मेदारी निभाने के लिये 10 अति उत्तम पुस्तकें उपलब्ध हो जायेंगी।

विनीत

शास्त्री जानसन सी फिलिप

विषय सूची

पाठ		पृष्ठ संख्या
1.	परमेश्वर	1
2.	सृष्टि	3
3.	मनुष्य की सृष्टि	5
4.	पहला पाप	7
5.	कैन और हाबिल	10
6.	हनोक	12
7.	जलप्रलय	15
8.	इब्राहीम और इसहाक	19
9.	एसाव और याकूब	22
10.	यूसुफ और उसके भाई	24
11.	यूसुफ - बंदीगृह में	27
12.	मिस्र का शासक–यूसुफ	30
13.	मूसा का जन्म	34
14.	जलती हुई झाड़ी	37
15.	लाल समुद्र	41
16.	मारा और एलीम	44
17.	मन्ना	46
18.	शमूएल	48
19.	दाऊद और गोलियत	51

20. एलिय्याह और कौवे 54
21. ठट्ठा करने वाले लड़के 56
22. विधवा और तेल 58
23. धधकता हुआ भट्ठा 60
24. दानिय्येल–सिंहों की मांद में 64
25. योना भविष्यद्वक्ता 67
26. प्रभु यीशु का जन्म 70
27. बालक यीशु और चरवाहे 72
28. बालक यीशु और ज्योतिषी 74
29. बालक यीशु–मंदिर में 76
30. काना में विवाह 78
31. टूटी छत 80
32. याईर की पुत्री 82
33. पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ 84
34. प्रभु यीशु और बालक 86
35. खोई हुई भेड़ 88
36. उड़ाऊ पुत्र 90
37. धनवान मनुष्य और लाजर 92
38. जक्कई 95
39. क्रूस 97
40. पुनरुत्थान 100

पाठ-1

परमेश्वर

(उत्पत्ति 1:1)

मुख्य बिंदु :

1. परमेश्वर सब वस्तुओं का आरंभ और सृष्टिकर्ता हैं।
2. परमेश्वर अच्छे हैं, और जो कुछ उन्होंने बनाया वह भी अच्छा है।
3. परमेश्वर ने सब कुछ सुंदर बनाया।
4. हमें परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना चाहिए, क्योंकि उन्होंने हमें बनाया।
5. परमेश्वर हमारी हर एक आवश्यकता की पूर्ति करते हैं। इसलिए हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए और धन्यवाद देना चाहिए।

पाठ :

जब हम अपने आस-पास देखते हैं, तब हम समझ सकते हैं कि यह संसार कितना अद्भुत है। कितने तरह के पेड़-पौधे, जानवर, और पक्षी हैं! फूलों की कितनी प्यारी खुशबू और कितने प्यारे रंग होते हैं। कितनी सारी सब्ज़ियाँ और स्वादिष्ट फल मिट्टी में उगते हैं! हाथी जैसे बड़े जानवर और चूहे जैसे छोटे जानवर हैं। ऐसे कीड़े-मकोड़े हैं जो उछलते हैं और छोटी-छोटी चींटियाँ भी! सभी की आँखें होती हैं और चलने के लिए पैर भी। इन सबका भोजन भी अलग-अलग होता है। हमारा परमेश्वर कितना महान और बुद्धिमान और सामर्थी हैं, जिन्होंने इन सबको इतनी अच्छी तरह बनाया।

मछलियों को ऐसे बनाया कि वह पानी में रह सकती हैं और पक्षियों को ऐसे बनाया कि वह हवा में उड़ सकते हैं। क्योंकि परमेश्वर ने इन सब अद्भुत वस्तुओं को बनाया, इसीलिए हम परमेश्वर को सर्वशक्तिमान कहते हैं। परमेश्वर की सारी सृष्टि बहुत अच्छी और सुंदर है। वह स्वर्ग से सब कुछ देखते हैं, और सब कुछ जानते हैं। इसलिए

परमेश्वर सर्वज्ञानी हैं।

परमेश्वर अच्छे हैं, वह हमें प्यार करते हैं और सब कुछ देते हैं। परमेश्वर हमें खाना, कपड़ा और रहने के लिए घर देते हैं। इसलिए, हमें उनसे प्यार करना चाहिए और उनको धन्यवाद देना चाहिए। हमें परमेश्वर से प्रार्थना भी करनी चाहिए, क्योंकि वह हमें सब कुछ देते हैं।

याद करें :

भजन संहिता 18:1 हे परमेश्वर, हे मेरे बल, मैं तुझ से प्रेम करता हूँ।

प्रश्न :

1. सब वस्तुओं की सृष्टि किसने की?
2. परमेश्वर ने क्या-क्या बनाया?
3. क्यों हमें परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए?
4. क्यों हमें प्रार्थना करनी चाहिए?

❊ ❊ ❊

पाठ–2

सृष्टि

(उत्पत्ति 1:3–25)

मुख्य बिंदु :

1. परमेश्वर ने अपने शब्द से, सब वस्तुओं की सृष्टि की।
2. जीवन परमेश्वर से मिलता है, और परमेश्वर की आज्ञा से समस्त जीवित प्राणी अस्तित्व में आए।
3. छः दिन में सृष्टि पूरी हुई।
4. परमेश्वर ने सब कुछ उपलब्ध कराया, जिसकी आवश्यकता मनुष्य को है।

पाठ :

पिछले पाठ में हमने सीखा था कि सब वस्तुओं को परमेश्वर ने बनाया, और परमेश्वर अच्छे हैं, और जो कुछ परमेश्वर ने बनाया वह अच्छा है। इस संसार के आरंभ होने से पहले ही परमेश्वर थे। उन्होंने अपने शब्द से आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की, और इस प्रकार दुनिया का आरंभ हो गया।

बाइबल बताती है कि पृथ्वी सुनसान थी और सब तरफ अंधेरा और पानी था। बाइबल की पहली पुस्तक के पहले अध्याय में लिखा है, कि कैसे परमेश्वर ने सब वस्तुओं की सृष्टि की।

उस अंधकार में एक दिन एक आवाज़ आई। यह परमेश्वर की आवाज़ थी। उन्होंने आज्ञा दी, ''रोशनी हो'' और रोशनी हो गई। परमेश्वर ने रोशनी को दिन कहा और अंधकार को रात कहा। वह पहला दिन था। फिर परमेश्वर ने पानी के ऊपर अन्तर करके आकाश की सृष्टि की। कभी–कभी उसे स्वर्ग भी कहा जाता है, परन्तु वास्तव में वह स्वर्ग नहीं है जहाँ परमेश्वर का सिंहासन है। आकाश से बहुत–बहुत ऊपर स्वर्ग है, जो हमें दिखाई नहीं देता। फिर से शाम हुई और फिर सुबह हुई। यह

दूसरा दिन था।

तीसरे दिन परमेश्वर ने आज्ञा दी कि, पृथ्वी के ऊपर का सारा पानी एक तरफ इकट्ठा हो जाए और सूखी भूमि दिखने लगे। तब ऐसा ही हो गया। सूखी भूमि में पहाड़ और घाटियाँ और समतल भूमि दिखाई देने लगे, और पानी से नदियाँ और समुद्र बन गए। तब परमेश्वर ने आज्ञा दी कि सूखी भूमि पर पेड़-पौधे उग जाएँ जिनमें पत्ते, फूल और बीज वाले फल लग जाएँ। तब ऐसा ही हो गया, और परमेश्वर ने देखा कि सब अच्छा है।

चौथे दिन परमेश्वर ने सुबह के लिए सूरज और रात के लिए चन्द्रमा और तारे बनाए। और परमेश्वर ने देखा कि वह अच्छा है।

पाँचवें दिन परमेश्वर ने पानी में रहने वाली छोटी, बड़ी सब तरह की मछलियों को बनाया और आकाश में उड़नेवाले पक्षियों की भी सृष्टि की। परमेश्वर ने कहा, ''हो जाए'' और वैसा ही हो गया। तब परमेश्वर ने उनको आशीष देकर कहा कि ''फूलो, फलो और पृथ्वी में भर जाओ''।

छठवें दिन परमेश्वर ने कहा, ''पृथ्वी से सब तरह के जानवर, रेंगनेवाले जंतु और जंगली जानवर उत्पन्न हों'' और वैसा ही हो गया। परमेश्वर ने देखा कि सब कुछ अच्छा है। हम अगले पाठ में सीखेंगे कि परमेश्वर ने और क्या बनाया।

याद करें :

यूहन्ना 1:3 सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ, और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।

प्रश्न :

1. समस्त संसार और जो कुछ उसमें है, उन सबको किसने बनाया?
2. परमेश्वर ने कैसे सब कुछ बनाया?
3. पहले दिन से छठवें दिन तक परमेश्वर ने क्या-क्या बनाया?

❊ ❊ ❊

पाठ-3

मनुष्य की सृष्टि

(उत्पत्ति 1:26-30; 2:7-25)

मुख्य बिंदु :

1. परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की योजना, अनंतकाल में ही बनाई थी।
2. परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया।
3. परमेश्वर ने अपनी महिमा के लिए मनुष्य की सृष्टि की।
4. हमें परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए।

पाठ :

पिछले पाठ में हमने सीखा, कि किस प्रकार परमेश्वर ने अपने शब्द से पृथ्वी और जो कुछ उसमें है, उन सबकी सृष्टि की। आज हम सीखेंगे कि परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि कैसे की।

परमेश्वर की योजना थी कि वे मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाएं। परमेश्वर चाहते थे कि उनके स्वरूप में बनाए गए मनुष्य आत्मिक हों, ताकि वे उनके साथ संगति कर सकें। और मनुष्य समस्त सृष्टि पर अधिकार भी रखे।

परमेश्वर ने पहले पुरुष को भूमि की मिट्टी से बनाया और उसके नथनों में ''जीवन का श्वास'' फूंक दिया, और आदम ''जीवित प्राणी'' बन गया। फिर परमेश्वर ने अदन देश में एक बगीचा बनाया और आदम को उसमें रख दिया। और उस बगीचे के बीच में ''जीवन'' का वृक्ष और ''भले या बुरे का ज्ञान'' के वृक्ष को भी लगाया। परमेश्वर ने आदम को आज्ञा दी ''तू इस बगीचे के सब वृक्षों का फल खा सकता है, परन्तु ''भले या बुरे का ज्ञान के वृक्ष'' के फल को कभी न खाना, क्योंकि जिस दिन तू उसके फल को खाएगा, उसी दिन अवश्य मर जाएगा।''

परमेश्वर ने सभी जानवरों में नर और मादा की सृष्टि की। परन्तु आदम ''अकेला'' था। परमेश्वर ने देखा कि आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं है, इसलिए परमेश्वर ने उसके लिए एक स्त्री की सृष्टि की।

परमेश्वर ने सब जानवरों और पक्षियों की सृष्टि की और उन्हें आदम के पास लाए। आदम ने उन सबके नाम रखे, परन्तु उनमें से आदम के लिए कोई ऐसा सहायक नहीं मिला जो उससे मेल खाता हो। तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को गहरी नींद में डाल दिया, और परमेश्वर ने उसकी एक पसुली निकाली और उससे एक स्त्री बना दी, और उसको आदम के पास ले आए। उस स्त्री को देखकर आदम ने कहा, ''अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है, इसलिए इसका नाम नारी होगा, क्योंकि यह नर में से निकाली गई है।'' (उत्पत्ति 2:23)। यह सृष्टि का छठवाँ दिन था। फिर आदम और उसकी पत्नी हव्वा उस बगीचे में रहे। वे परमेश्वर के साथ संगति में रहते थे और खुश थे।

याद करें :

प्रेरितों के काम 17:26. परमेश्वर ने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियाँ सारी पृथ्वी पर रहने के लिए बनाई हैं।

प्रश्न :

1. परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि क्यों की?
2. कौन सा दिन था, जब मनुष्य की सृष्टि हुई?
3. परमेश्वर ने आदम को कैसे बनाया?
4. परमेश्वर ने हव्वा को कैसे बनाया?
5. आदम और हव्वा कहाँ रहते थे?

❄ ❄ ❄

पाठ–4

पहला पाप

(उत्पत्ति–3)

मुख्य बिंदु :

1. परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने के लिए शैतान मनुष्यों को लुभाता है। हमें सावधान रहना चाहिए।
2. परमेश्वर पर शक करने वाली किसी भी बात को हम मानेंगे, तो हमसे गलती हो जाएगी।
3. अनाज्ञाकारिता अत्यंत नुकसान लाती है।

पाठ :

पिछले पाठ में हमने सीखा कि किस प्रकार आदम और हव्वा उस सुंदर अदन के बगीचे में रहते थे। क्या आपको याद है कि वे दो वृक्ष कौन से थे जो उस वाटिका के बीच में थे? ''भले या बुरे का ज्ञान'' के वृक्ष के फल के बारे में परमेश्वर ने आदम को क्या आज्ञा दी थी?

एक दिन शैतान उस बगीचे में आया। अपने घमंड के कारण वह स्वर्ग से निकाला गया था। वह परमेश्वर से नाराज़ था और एक अवसर की तलाश में था कि अदन की वाटिका की खुशी को समाप्त कर सके, और परमेश्वर की सृष्टि के तालमेल को नष्ट कर दे। वह एक साँप के रूप में हव्वा के पास आया जब वह अकेली थी। उसने हव्वा से कहा, ''क्या सच है, कि परमेश्वर ने कहा, कि तुम इस बगीचे के किसी वृक्ष का फल न खाना?'' स्त्री ने उत्तर दिया, ''हम इस वाटिका के वृक्षों के फल खा सकते हैं, परन्तु जो वृक्ष वाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि, न तो तुम उसको खाना और न उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे।'' तब सर्प ने हव्वा से कहा, ''तुम निश्चय न मरोगे, परन्तु यदि तुम उसका फल खाओगे तो तुम भले और बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।'' हव्वा ने परमेश्वर

के वचन पर विश्वास नहीं किया, बल्कि साँप के रूप में आए शैतान की बात सुनी। जब उसने देखा कि वह फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ और बुद्धि देने के लिए चाहने योग्य भी है, तब उसने उसमें से तोड़कर खाया, और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया। तब उन्होंने परमेश्वर की महिमा को खो दिया जो उनके पास थी। और उन्हें मालूम हुआ कि वे नंगे हैं। अपनी नग्नता छिपाने के लिए उन्होंने अंजीर के पत्ते जोड़-जोड़ कर अपने लिए लंगोट बना लिए। परमेश्वर की आज्ञा न मानने के कारण वे दोषी हो गए और उन्होंने परमेश्वर के साथ संगति को खो दिया। और उनकी आत्मिक मृत्यु हो गई। इसके परिणामस्वरूप वे परमेश्वर से डर गए। दिन के ठंडे समय जब परमेश्वर वाटिका में आए, तब आदम और हव्वा छिप गए।

परमेश्वर ने उसे पुकारा, ''आदम, तू कहाँ है?'' आदम ने उत्तर दिया, ''मैं नंगा था इसलिए छिप गया।'' तब परमेश्वर ने उससे पूछा, ''क्या तूने उस वृक्ष का फल खाया है, जिसे खाने के लिए मैंने मना किया था?'' आदम ने उत्तर में कहा कि जिस स्त्री को तूने मुझे दिया है, उसने वह फल मुझे दिया और मैंने खा लिया। स्त्री से पूछे जाने पर उसने उत्तर दिया कि साँप ने उसे धोखा दिया था। परमेश्वर ने सर्प से कहा, ''क्योंकि तूने यह किया है, इसलिए तू श्रापित है। तू पेट के बल चला करेगा और जीवन भर मिट्टी चाटता रहेगा। स्त्री का वंश तेरे सिर को कुचल डालेगा और तू उसकी एड़ी को डसेगा।'' फिर स्त्री से परमेश्वर ने कहा, ''मैं तेरे दुख और पीड़ा को बढ़ाऊँगा और तेरा पति तुझ पर प्रभुता करेगा।'' फिर परमेश्वर ने आदम से कहा, कि उसके कारण भूमि शापित है, और अब भोजन प्राप्त करने के लिए उसे पसीना बहाना पड़ेगा। परमेश्वर ने आदम से यह भी कहा, ''तू मिट्टी है और अंत में मिट्टी में ही मिल जाएगा।'' फिर परमेश्वर ने उनके लिए चमड़े के अंगरखे बनाकर उनको पहिना दिए। चमड़े के लिए निश्चित ही जानवर को मारना पड़ा, जिससे आदम समझ गया कि उसका पाप संसार में मृत्यु लाया। परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अदन की वाटिका से बाहर निकाल दिया। और जीवन के वृक्ष के मार्ग का पहरा देने के लिए,

अदन की वाटिका के पूर्व की ओर करूबों को, और चारों ओर घूमनेवाली ज्वालामय तलवार को नियुक्त कर दिया।

अदन की वाटिका के बाहर उन्होंने एक अलग प्रकार का जीवन शुरू किया। आज्ञा का पालन न करने के कारण उन्होंने अदन की वाटिका के आनंद को खो दिया। उनके पाप के कारण रोग, दुख, पीड़ा, भय, गरीबी और मृत्यु इस संसार में आए।

याद करें :

रोमियों 5:12 एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई।

प्रश्न :

1. परमेश्वर की आज्ञा तोड़ने के लिए किसने हव्वा को लुभाया?
2. क्या हुआ जब उन्होंने उस फल को खाया?
3. सर्प को क्या श्राप मिला?
4. आदम को क्या दण्ड मिला?

❊ ❊ ❊

पाठ–5

कैन और हाबिल

(उत्पत्ति 4:1–15)

मुख्य बिंदु :

1. हमें उसी प्रकार से आराधना करनी चाहिए, जैसा परमेश्वर हमसे चाहते हैं।
2. परमेश्वर उन लोगों की आराधना स्वीकार करते हैं, जिन्हें पापों की क्षमा प्राप्त हुई है।
3. प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर का मेम्ना हैं, जिन्होंने स्वयं अपना बलिदान चढ़ा दिया।
4. जो कोई प्रभु यीशु के बलिदान पर विश्वास करता है, उसे पापों की क्षमा प्राप्त होती है।

पाठ :

पिछले पाठ में हमने सीखा कि, अदन की वाटिका में से निकाले जाने के बाद आदम के जीवन का तरीका बदल गया था। उसे भोजन के लिए कठिन परिश्रम करना था। इसका अर्थ था कि उसे खेती करनी थी। अपने भोजन के लिए वह जानवरों पर भी निर्भर था। उसके दो पुत्र हुए। बड़े का नाम कैन था और छोटे का नाम हाबिल था। कैन खेती करता था और सब्ज़ियाँ उगाता था, और हाबिल भेड़ों का चरवाहा बन गया।

कुछ समय के पश्चात् दोनों यहोवा परमेश्वर के लिए अपनी–अपनी भेंट लेकर आए। कैन भूमि की उपज में से भेंट लाया और हाबिल अपनी भेड़ों के झुण्ड में से भेंट लेकर आया। परमेश्वर ने हाबिल को और उसकी भेंट को स्वीकार किया, परन्तु कैन और उसकी भेंट को स्वीकार नहीं किया। परमेश्वर ने हाबिल की भेंट इसलिए स्वीकार की, क्योंकि उसमें लहू बहाया गया था। बाइबल में लिखा है, ''बिना लहू बहाए पापों की क्षमा नहीं होती।'' (इब्रानियों 9:22)। परमेश्वर ने कैन

की भेंट को स्वीकार नहीं किया क्योंकि उसके बलिदान में लहू नहीं था। इसलिए कैन परमेश्वर से बहुत क्रोधित हो गया, परंतु परमेश्वर ने उससे कहा, ''यदि तू भला करे, तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न की जाएगी?'' तथापि, कैन ने अपनी गलती को नहीं सुधारा। वह परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए तैयार नहीं था। वह अपने भाई से बैर करने लगा।

एक दिन जब दोनों भाई मैदान में थे, तब कैन ने अपने भाई हाबिल पर चढ़कर उसे मार डाला। ईर्ष्या कितनी क्रूर होती है! परमेश्वर ने कैन को पुकारा और पूछा, ''तेरा भाई हाबिल कहाँ है?'' कैन ने कहा, ''मालूम नहीं; क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूँ?''

देखो बच्चों, पाप ने कैसे कैन को स्वार्थी और क्रूर बना दिया। उसने किस तरह से परमेश्वर को उत्तर दिया। परमेश्वर ने कैन से कहा, ''तू खेती करेगा तौभी उसकी पूरी उपज तुझे न मिलेगी, और तू पृथ्वी पर भगोड़ा होगा।'' तब कैन परमेश्वर के सम्मुख से निकल गया और अदन के पूर्व में नोद् नाम के देश में रहने लगा।

याद करें :

1 यूहन्ना 3:15 जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह हत्यारा है।

प्रश्न :

1. आदम के दोनों पुत्रों के नाम क्या हैं?
2. उनकी भेंटें क्या थीं?
3. किसकी भेंट को परमेश्वर ने स्वीकार किया? और क्यों?
4. उसके पश्चात् कैन ने क्या किया?
5. परमेश्वर ने कैन को क्या शाप दिया?

❊ ❊ ❊

पाठ-6

हनोक

(उत्पत्ति 5:18-27)

मुख्य बिंदु :

1. परमेश्वर के साथ चलने से आशीष प्राप्त होती है।
2. जो लोग परमेश्वर के साथ चलते हैं, वे परमेश्वर के मित्र कहलाते हैं, और परमेश्वर उनको अपनी बातें बताते हैं।
3. जब प्रभु यीशु वापस आएँगे, तब उन सबको अपने साथ स्वर्ग ले जाएँगे, जो उनके मार्गों पर चलते हैं।
4. हनोक उन विश्वासियों का उदाहरण है, जो प्रभु यीशु के आगमन पर उनके पास उठा लिए जाएँगे।

पाठ :

हाबिल की मृत्यु के पश्चात् आदम और हव्वा को एक और पुत्र उत्पन्न हुआ, और उन्होंने उसका नाम शेत रखा। उसने परमेश्वर को प्रसन्न किया और अपने पुत्रों और पोतों को भी परमेश्वर की आराधना करना सिखाया।

उन दिनों में लोगों की उम्र बहुत लंबी होती थी, इस कारण उनके परिवार बड़े होते थे। और पृथ्वी पर मनुष्यों की संख्या तेजी से बढ़ने लगी।

कैन का वंश भी तेजी से बढ़ने लगा। वह परमेश्वर की उपस्थिति से दूर चला गया था, इस कारण उसके पुत्र भी गलत रास्तों पर चले। हर प्रकार की दुष्टता और हिंसा बढ़ती गई। शेत की पाँचवीं पीढ़ी में उसके ही परिवार में हनोक का जन्म हुआ। वह हाबिल और शेत की तरह परमेश्वर की आराधना करता था। वह परमेश्वर के साथ निकट संगति में था और परमेश्वर के साथ चलता था। अर्थात् परमेश्वर के मार्गों

में पूर्ण मन से चलता था।

जब हनोक पैंसठ वर्ष का हुआ तब उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उस समय आदम छः सौ सतासी वर्ष का हो गया था। संभवतः हनोक ने आदम से ही परमेश्वर की आज्ञाओं के बारे में और पाप का इस संसार में आने का वर्णन सुना था। परमेश्वर ने हनोक पर प्रकट किया कि इस संसार पर न्याय आने वाला है। हनोक ने अपने पुत्र का नाम मतूशेलह रखा, जिसका अर्थ है, ''उसकी मृत्यु पर आएगा''। उसका नाम संसार पर आने वाले न्याय की ओर संकेत करता था। मतूशेलह की मृत्यु के पश्चात् जल प्रलय आया। हनोक ने अंतिम न्याय के विषय में भी भविष्यद्वाणी की थी। (यहूदा 14, 15)। मतूशेलह के जन्म के पश्चात् हनोक तीन सौ वर्षों तक परमेश्वर के साथ-साथ चला।

जब दो मित्र साथ-साथ चलते हैं, तब वे एक दूसरे से बातचीत करते हैं और एक दूसरे की भावनाओं को समझते हैं। उसी प्रकार जब हम परमेश्वर के साथ-साथ चलते हैं तब हम परमेश्वर के वचन के द्वारा उनकी बातें सुनेंगे। हम प्रार्थना में परमेश्वर से बातें करेंगे और आत्मिक रूप से उनके अनुरूप बनते चले जाएँगे। तब जो लोग हमें देखेंगे वे जान जाएँगे कि हम परमेश्वर की संतान हैं।

एक दिन जब हनोक परमेश्वर के साथ चल रहा था, तब परमेश्वर ने उसे अपने पास स्वर्ग पर उठा लिया। जिस प्रकार हनोक सशरीर ही स्वर्ग पर उठा लिया गया, उसी प्रकार जब प्रभु यीशु मसीह दोबारा आएँगे, तब उन पर विश्वास करने वाले लोग भी क्षण भर में बदल जाएँगे और उठा लिए जाएँगे कि प्रभु के साथ रहें।

याद करें :

इब्रानियों 11:5 विश्वास ही से हनोक उठा लिया गया, कि मृत्यु को न देखे।

प्रश्न :

1. आदम से हनोक तक कितनी पीढ़ी हुईं?

2. हनोक का जन्म किसके परिवार में हुआ?
3. हनोक के पुत्र का क्या नाम है? और उसका क्या अर्थ है?
4. हनोक कितने वर्ष का था, जब परमेश्वर ने उसे उठा लिया?
5. हनोक को क्या आशीष मिली?

❇ ❇ ❇

पाठ–7

जलप्रलय

(उत्पत्ति 6 व 7)

मुख्य बिंदु :

1. परमेश्वर पवित्र हैं, अतः वह पाप का दंड देंगे।
2. नूह का जहाज़ प्रभु यीशु मसीह का प्रतीक है, क्योंकि यदि हम प्रभु में हैं, तो हम सुरक्षित हैं।
3. जो लोग प्रभु यीशु के द्वारा उद्धार प्राप्त नहीं करते, उन्हें परमेश्वर के न्याय का सामना करना होगा।

पाठ :

बच्चों, आज हम उस बाढ़ के विषय में सीखेंगे, जिसे मनुष्यों की दुष्टता के कारण परमेश्वर ने दुनिया में भेजी। कैन के वंशज बहुत बढ़ गए, और उन्होंने शहर बना लिए। उन्होंने परमेश्वर से प्रेम नहीं किया, बल्कि दुष्टता के साथ जीवन व्यतीत किया। शेत के वंशज भी बढ़ते गए, और परमेश्वर के मार्गों में चले। परन्तु कुछ समय बाद वे भी परमेश्वर से दूर चले गए। समस्त संसार दुष्टता से इतना अधिक भर गया कि परमेश्वर उसको दंड दिए बगैर न रह सके। पाप सदैव मृत्यु में ही समाप्त होता है।

उनमें एक धर्मी पुरुष था–नूह। अपने लोगों के समय में वह निर्दोष था, और परमेश्वर के साथ-साथ चलता था। वह हनोक के परिवार का था। परमेश्वर ने उसे बताया कि वे जलप्रलय के द्वारा उस समय की पीढ़ी को नाश करने वाले हैं। तथापि, परमेश्वर के अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी रही।

परमेश्वर ने नूह से कहा कि वह बड़ा सा जहाज़ बनाए। और उसमें तीन मंजिलें हों, ऊपर की तरफ एक खिड़की और एक तरफ एक दरवाज़ा भी बनाए। नूह ने परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार किया। और

जहाज़ के भीतर, बाहर राल लगाई ताकि पानी अंदर न आ सके। जब नूह जहाज़ बना रहा था, तब परमेश्वर ने लोगों को पश्चाताप करने के लिए काफी समय दिया। जहाज़ बनाने के दौरान लगभग सौ वर्षों तक नूह प्रचार भी करता रहा। वह लोगों को चेतावनी देता रहा कि परमेश्वर धर्मी हैं, और इस कारण उन लोगों का पाप उनके सर्वनाश का कारण बन जाएगा। तथापि, किसी ने भी परवाह नहीं की, न ही पश्चाताप किया।

परमेश्वर के अनुग्रह का समय समाप्त हो चुका था। मतूशेलह की उम्र सबसे अधिक रही, परन्तु उसके पिता हनोक ने भविष्यद्वाणी की थी, ''उसकी मृत्यु पर वह आएगा''। अब उसकी मृत्यु होने वाली थी, और जहाज़ तैयार था, और न्याय आने वाला था।

परमेश्वर ने नूह को आज्ञा दी कि सब जीवित प्राणियों में से प्रत्येक जाति के दो-दो पशुओं (शुद्ध पशुओं के सात-सात) को जहाज़ में ले लेना। और उन सबके लिए भोजन वस्तुएँ भी ले लेना। सारे पशु-पक्षी नूह के पाए आए और जहाज़ में चले गए। फिर नूह, उसकी पत्नी, उसके तीन बेटे शेम, हाम और येपेत और तीनों की पत्नियाँ जहाज़ के अन्दर चले गए और परमेश्वर ने जहाज़ का द्वार बंद कर दिया। उस समय नूह 600 वर्ष का था।

सात दिन के पश्चात् भारी वर्षा होने लगी और लगातार चालीस दिन तक होती रही। साथ ही बड़े गहरे समुद्र के सब सोते फूट निकले और आकाश के झरोखे खुल गए। बाढ़ का पानी बहुत बढ़ गया जिससे जहाज़ ऊपर को उठने लगा, और पानी के ऊपर तैरने लगा। पानी इतना बढ़ गया कि ऊँचे पहाड़ भी डूब गए और पृथ्वी पर सारे जीवित प्राणी मर गए। सारे मनुष्य, जानवर, पशु-पक्षी और रेंगने वाले जन्तु सब मर मिटे। और पृथ्वी पर एक सौ पचास दिन तक पानी भरा रहा।

तब परमेश्वर ने नूह को स्मरण किया और पृथ्वी पर हवा भेजी जिससे पानी सूखने लगा, और जहाज़ अरारात नाम के पर्वत पर टिक गया। नूह ने खिड़की खोलकर एक कौए को उड़ा दिया, और जब तक

जल सूख न गया तब तक वह इधर–उधर फिरता रहा। फिर नूह ने एक कबूतरी को उड़ा दिया। बैठने की जगह न पाकर वह वापस जहाज़ पर लौट आई। फिर सात दिन के पश्चात् नूह ने उसी कबूतरी को फिर से उड़ा दिया। वह शाम को अपनी चोंच में जलपाई का एक नया पत्ता लेकर जहाज़ में लौट आई, जिससे नूह समझ गया कि जल पृथ्वी पर घट गया है। फिर उसने सात दिन और ठहरकर उसी कबूतरी को उड़ा दिया, और वह उसके पास फिर कभी लौटकर न आई।

तब नूह ने जहाज़ की छत खोलकर बाहर देखा। उसे सूखी भूमि दिखाई दी, परन्तु उसे आठ हफ्ते और इंतज़ार करना पड़ा। फिर परमेश्वर ने नूह से कहा, कि तू अपने पुत्रों, पत्नी और बहुओं समेत जहाज़ में से निकल आ। और सब पशु–पक्षियों को भी जहाज़ से बाहर निकाल ला, ताकि वे पृथ्वी पर फले–फूलें, उनके बहुत बच्चे उत्पन्न हों और वे पृथ्वी पर फैल जाएँ।

सबसे पहले नूह ने एक वेदी बनाई और शुद्ध पशुओं की बलि चढ़ाई। अपने बचाने वाले परमेश्वर के प्रति यह उसकी आराधना थी। यद्यपि नूह एक धर्मी पुरुष था, जो बहुत वर्षों तक परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य और आज्ञाकारी रहा था, परन्तु वह जानता था कि वह बिना बलि का लहू बहाए पवित्र परमेश्वर की आराधना नहीं कर सकता।

परमेश्वर ने उसकी आराधना को स्वीकार किया और नूह से यह वायदा किया कि वह जलप्रलय से फिर कभी भी संसार को नष्ट नहीं करेंगे। संसार के साथ और नूह के साथ बाँधी इस वाचा के स्मरण के लिए, एक चिह्न के रूप में परमेश्वर ने बादलों पर एक मेघधनुष बनाया।

याद करें :

भजन संहिता 3:8 उद्धार यहोवा ही की ओर से होता है, हे यहोवा तेरी आशीष तेरी प्रजा पर हो।

प्रश्न :

1. परमेश्वर ने जलप्रलय क्यों भेजा?
2. नूह और उसका परिवार उस भयंकर जलप्रलय से कैसे बचे?
3. जहाज़ में कितने लोग गए? वे कौन-कौन थे?
4. क्या हुआ जब बाढ़ आई?
5. पृथ्वी को दोबारा बाढ़ से नष्ट नहीं करेंगे यह परमेश्वर का वायदा था, और इसके लिए परमेश्वर ने क्या चिह्न दिया?

❊ ❊ ❊

पाठ-8

इब्राहीम और इसहाक

(उत्पत्ति 22:1-10)

मुख्य बिंदु :

1. इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया।
2. परमेश्वर की आज्ञा मानते हुए, इब्राहीम अपने पुत्र की बलि देने के लिए तैयार था।
3. इसहाक के स्थान पर एक मेढ़े को बलि किया गया। यह हमारे लिए किए गए प्रभु यीशु के बलिदान का प्रतीक है।
4. आज्ञा मानना बलि चढ़ाने से अच्छा है।

पाठ :

जलप्रलय के पश्चात् नूह का परिवार गिनती में बढ़ता गया और उनसे अनेक राष्ट्र बन गए। फिर से, लोगों ने जीवते परमेश्वर को भुला दिया और मूर्तिपूजा में लग गए। दुष्टता विश्वव्यापी हो गई। तथापि, मनुष्य जाति के लिए परमेश्वर की एक योजना थी। वे अपने लिए एक परिवार को अलग करना चाहते थे, जो संसार के सामने एकमात्र जीवते परमेश्वर का गवाह हो।

मिसुपुतामिया (आधुनिक ईराक) का एक शहर था ऊर, जहाँ इब्राहीम नामक एक पुरुष रहता था। एक दिन परमेश्वर ने उससे बातें कीं और कहा, ''अपने देश, और अपनी जन्मभूमि, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा, जो मैं तुझे दिखाऊँगा। और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊँगा, और तुझे आशीष दूँगा, और तेरा नाम बड़ा करूँगा, और तू आशीष का मूल होगा।''

इब्राहीम ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया और अपनी पत्नी सारा को लेकर निकल गया। जब वे कनान पहुँचे, तब परमेश्वर ने

उससे कहा, ''यह देश मैं तुम्हारे वंश को दूँगा।'' (उत्पत्ति 12:7)। इब्राहीम ने एक वेदी बनाई और परमेश्वर की आराधना की। यद्यपि उसके कोई संतान नहीं थी, फिर भी उसने परमेश्वर पर और उनके वायदे पर विश्वास किया।

इब्राहीम सौ वर्ष का हो चुका था और सारा की उम्र नब्बे वर्ष थी। तब परमेश्वर ने उन्हें वायदा किया हुआ पुत्र दिया जिसका नाम इसहाक था। कुछ वर्षों के पश्चात् परमेश्वर ने इब्राहीम की परीक्षा ली। परमेश्वर इब्राहीम के विश्वास की गहराई जानना चाहते थे। परमेश्वर ने कहा कि वह अपने प्रिय पुत्र इसहाक को मोरिय्याह पर्वत पर ले जाकर परमेश्वर के लिए बलि चढ़ाए। इब्राहीम इस बात को समझ न सका, परन्तु वह जानता था कि उसे परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना होगा। उसने सोचा, कि यदि वह इसहाक को मार भी डालेगा, तौभी परमेश्वर उसे जीवित कर देंगे और अपने वायदे को पूरा करेंगे।

अगले दिन सुबह सवेरे इब्राहीम उठा और अपने गदहे पर काठी कसकर अपने दो सेवक, और अपने पुत्र इसहाक को साथ लिया, और होमबलि के लिए लकड़ी, आग और चाकू भी लिया। तीन दिन की यात्रा के पश्चात् उसे मोरिय्याह पर्वत दिखाई दिया। उसने अपने सेवकों से कहा, ''गदहे के पास यहीं ठहरो। मैं और इसहाक वहाँ जाकर परमेश्वर को दण्डवत् करके वापस आएँगे।'' फिर उसने लकड़ी लेकर इसहाक पर लादी, और आग और छुरी को अपने हाथ में लिया, और दोनों चल पड़े। तब इसहाक ने अपने पिता से कहा, ''हे मेरे पिता, आग और लकड़ी तो हैं, पर होमबलि के लिए भेड़ कहाँ है?'' इब्राहीम ने उसे उत्तर दिया, ''हे मेरे पुत्र, परमेश्वर होमबलि के लिए भेड़ का उपाय खुद ही करेंगे।'' जब वे उस स्थान पर पहुँचे, तब इब्राहीम ने एक वेदी बनाई और लकड़ी को चुन-चुन कर उस पर रखा। फिर उसने अपने पुत्र को बाँधकर वेदी की लकड़ी के ऊपर रख दिया। जब इब्राहीम ने अपने पुत्र की बलि के लिए छुरी उठाई, तब उसे स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी, ''हे इब्राहीम, हे इब्राहीम'' इब्राहीम ने उत्तर दिया, ''देख, मैं यहाँ हूँ।'' प्रभु के दूत ने कहा, ''लड़के पर हाथ मत बढ़ा, और न उसे

कुछ कर। तूने मुझसे अपने एकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा, इससे अब मैं जान गया कि तू परमेश्वर का भय मानता है।''

इब्राहीम ने आँखें उठाकर झाड़ी में फँसे एक मेढ़े को देखा। उसने उसे लेकर अपने पुत्र इसहाक के बदले होमबलि चढ़ाया। परमेश्वर ने वास्तव में एक मेढ़े का उपाय किया था। इब्राहीम ने उस स्थान का नाम **यहोवा यिरे** रखा जिसका अर्थ है कि परमेश्वर उपाय करेंगे।

बाद में, इब्राहीम और इसहाक के वंशज, राजा सुलैमान ने इसी पर्वत पर परमेश्वर का मंदिर बनवाया था। (2 इतिहास 3:1)।

परमेश्वर के दूत ने दोबारा स्वर्ग से पुकार कर इब्राहीम से कहा, ''यहोवा की यह वाणी है कि, क्योंकि तू अपने एकलौते पुत्र को मेरे लिए बलि करने के लिए तैयार है, इस कारण मैं निश्चय तुझे आशीष दूँगा, और निश्चय तेरे वंश को आकाश के तारागण और समुद्र तीर की बालू के किनकों के समान अनगिनत करूँगा, और पृथ्वी की सारी जातियाँ तेरे वंश के कारण आशीषित होंगी।''

इब्राहीम और इसहाक अपने सेवकों के पास आए और फिर वे घर लौट आए। अपने विश्वास और आज्ञाकारिता के कारण इब्राहीम ''विश्वासियों का पिता'' कहलाता है।

याद करें :

1 शमूएल 15:22 आज्ञा मानना बलि चढ़ाने से उत्तम है।

प्रश्न :

1. इब्राहीम की जन्मभूमि कौन सी थी?
2. परमेश्वर उसे किस स्थान पर लाए?
3. इब्राहीम की पत्नी का क्या नाम था?
4. परमेश्वर ने इब्राहीम की परीक्षा कैसे ली?
5. इब्राहीम को कौन सा वायदा प्राप्त हुआ?

❊ ❊ ❊

पाठ–9

एसाव और याकूब

(उत्पत्ति 25:19-38)

मुख्य बिंदु :

1. परमेश्वर प्रार्थनाओं का उत्तर अपने समय पर देते हैं।
2. लड़कों के पैदा होने से पहले ही परमेश्वर ने कहा था, कि छोटा अधिक सामर्थी होगा।
3. जो लोग स्वयं की खुशी के लिए जीते हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करते।
4. सही चुनाव करने का महत्व।

पाठ :

आज हम उन दो भाइयों के बारे में सीखेंगे, जिनका चुनाव उनके लिए निर्णायक था। पिछले पाठ में हमने इब्राहीम और इसहाक के बारे में और परमेश्वर के वायदे के बारे में सीखा। इसहाक ने बतूएल की बेटी रिबका से विवाह किया। रिबका के जुड़वाँ पुत्र उत्पन्न हुए। उनके पैदा होने से पहले ही परमेश्वर ने रिबका से कहा कि उसके दोनों ही पुत्र बड़े-बड़े राष्ट्र के पिता होंगे, परन्तु छोटा, बड़े से अधिक सामर्थी होगा। उन दिनों में पहलौठे पुत्र को अन्य पुत्रों की तुलना में अधिक विशेषाधिकार प्राप्त होता था जिसे **जन्मसिद्ध अधिकार** कहते थे। उत्तराधिकार, पैतृक संपत्ति और अन्य अनेक बातों का दोगुना हिस्सा प्राप्त होता था। जुड़वों में पहला बालक लाल रंग का दिखता था, और उन्होंने उसका नाम एसाव रखा, जिसका अर्थ है, ''लाल''। दूसरा लड़का तुरंत बाहर आया और वह एसाव की एड़ी पकड़े हुए उत्पन्न हुआ। उसका नाम याकूब रखा गया। बड़े होने पर एसाव चतुर शिकार खेलनेवाला बन गया, और याकूब तंबुओं में रहा करता था। इसहाक, एसाव के अहेर का माँस खाया करता था, इसलिए उससे प्रेम करता था, परन्तु रिबका याकूब को प्यार करती थी।

एक दिन याकूब कुछ दाल पका रहा था तब एसाव मैदान से भूखा

और थका हुआ आया। उसने याकूब से खाने के लिए दाल माँगी। याकूब चालाक था, उसने मौके का फायदा उठाया। उसने एसाव से कहा, ''क्या दाल के बदले तुम मुझे अपना पहिलौठे का अधिकार बेच दोगे?'' एसाव ने कहा, ''जब मैं भूख से मर रहा हूँ, तो पहिलौठे के अधिकार से मुझे क्या लाभ होगा?'' एसाव ने शपथ खाई और अपने पहिलौठे का अधिकार याकूब को बेच दिया। याकूब ने एसाव को रोटी और पकाई हुई मसूर की दाल दी। उसने खाया-पीया और उठकर चला गया। इस प्रकार एसाव ने अपने पहिलौठे के अधिकार को तुच्छ जाना। उसने उन आशीषों की परवाह नहीं की, जो उसको मिलने वाली थीं।

याकूब चालाक था जिसने अपने भाई को धोखा दिया। बाद में उसने अपने पिता को धोखा देकर उससे सारी आशीषें ले लीं। धोखा देना बहुत बुरी बात है। तथापि, हम देखते हैं कि याकूब के इस कार्य का कारण, परमेश्वर के वायदों पर उसका विश्वास था। परमेश्वर सदैव ही विश्वास का प्रतिफल देते हैं। जो लोग परमेश्वर के वचन पर विश्वास करते हैं, उनसे वह प्रेम करते हैं। परमेश्वर ने याकूब को उसके धोखे के लिए अनुशासित किया, परन्तु उसे **जन्मसिद्ध अधिकार** का वारिस बनाया। बाद में परमेश्वर ने याकूब का नाम इस्राएल रखा, और वह इस्राएल राष्ट्र का मूलपिता बना।

याद करें :

इब्रानियों 12:15-16, ध्यान से देखते रहो, ऐसा न हो कि कोई जन एसाव की तरह अधर्मी हो। जिसने एक बार के भोजन के बदले अपने पहिलौठे के पद को बेच डाला।

प्रश्न :

1. इसहाक की पत्नी कौन थी? वह किसकी बेटी थी?
2. उसके पुत्रों के क्या नाम हैं?
3. एसाव ने अपने जन्मसिद्ध अधिकार को कैसे खोया?
4. ''पहिलौठे का अधिकार'' का क्या अर्थ है?
5. हमें किस बात में याकूब की तरह होना चाहिए?

❊ ❊ ❊

पाठ-10

यूसुफ और उसके भाई

(उत्पत्ति 37:1-36)

मुख्य बिंदु :

1. यूसुफ का पिता अपने सब बच्चों में, सबसे अधिक यूसुफ से प्रेम करता था।
2. बाइबल के लिखे जाने से पहले परमेश्वर स्वप्नों के द्वारा बातें करते थे।
3. जलन रखना क्रूर बात है, और वह दुष्ट कार्यों को प्रेरित करता है।
4. यूसुफ, प्रभु यीशु मसीह का प्रतीक है।

पाठ :

आज हम यूसुफ के बारे में सीखेंगे, और यह भी, कि किस प्रकार उसके भाइयों ने उसे कष्ट दिए। याकूब के बारह पुत्र थे, जिनमें से यूसुफ ग्यारहवाँ था। याकूब, यूसुफ से बहुत प्रेम करता था, क्योंकि वह उसके बुढ़ापे का पुत्र था। सत्रह वर्ष का होने के पश्चात् वह अपने बड़े भाइयों के साथ जाता था, जो चरवाहे थे। और घर लौटने पर वह उनकी बुराइयों का समाचार अपने पिता को देता था। इस कारण उसके भाई उससे बैर करते थे। एक बार याकूब ने अपने पुत्र यूसुफ के लिए एक रंगबिरंगा अंगरखा बनवाया। इस कारण उसके भाई उसके प्रति जलन से भर गए।

एक दिन यूसुफ ने एक स्वप्न देखा। उसने इसका वर्णन अपने भाइयों से किया। ''जब हम खेत में थे, और अपने-अपने पूले बाँध रहे थे, तब मैंने देखा कि मेरा पूला सीधा खड़ा हो गया और तुम्हारे पूलों ने मेरे पूले को चारों तरफ से घेर लिया और उसे दण्डवत् किया।'' जब उन्होंने यह सुना, तब वे उससे और भी बैर करने लगे, और उससे

कहा, ''क्या तू सचमुच हमारे ऊपर राज्य करेगा?'' कुछ दिनों के पश्चात् यूसुफ ने एक स्वप्न और देखा, और अपने भाइयों से उसका वर्णन किया, ''मैंने स्वप्न देखा कि सूर्य और चाँद और ग्यारह तारे आकर मुझे दण्डवत् कर रहे हैं।'' याकूब स्वप्न का अर्थ समझ गया, इसलिए उसने यूसुफ को डाँटकर कहा, ''क्या सचमुच मैं और तेरी माता और तेरे भाई सब आकर तेरे सामने दण्डवत् करेंगे?''

परमेश्वर ने भविष्य में होने वाली बातों को स्वप्न में उन पर प्रकट किया। उसके भाई उससे जलने लगे, परंतु याकूब ने इन बातों को स्मरण रखा, यद्यपि उसे स्पष्ट रूप से समझ नहीं आया था।

एक दिन यूसुफ के भाई लोग अपनी भेड़-बकरियाँ लेकर शकेम को गए। याकूब ने यूसुफ से कहा, ''अपने भाइयों के पास शकेम को जा, और उनका और भेड़-बकरियों का हाल देखकर मेरे पास उनका समाचार लेकर आ।'' जब तक यूसुफ शकेम पहुँचा, तब तक उसके भाई दोतान को जा चुके थे। यूसुफ उन्हें ढूँढ़ता हुआ दोतान पहुँचा। जब उन्होंने यूसुफ को आते देखा, तब उन्होंने उसे मार डालने की योजना बनाई। सबसे बड़े भाई रूबेन ने उन्हें इसकी अनुमति नहीं दी। अतः उन्होंने उसका रंगबिरंगा अंगरखा उतार लिया और उसे एक सूखे गड़हे में डाल दिया। रूबेन बाद में उसे बचाना चाहता था।

मिस्र जाने वाले कुछ व्यापारी अपने ऊँटों के साथ वहाँ से निकले। यूसुफ के भाइयों ने उसे गड़हे से निकालकर, उनके हाथ चाँदी के बीस टुकड़ों में बेच दिया। याद रखो, हमारे प्रभु यीशु को भी उनके एक शिष्य ने बेच दिया था। ये व्यापारी मिद्यानी लोग थे। उन्होंने यूसुफ को मिस्र ले जाकर पोतीपर के हाथ बेच दिया, जो फिरौन का एक अधिकारी था। यूसुफ के भाइयों ने उसके रंगबिरंगे अंगरखे को लेकर एक बकरे को मार कर उसके खून में डुबा दिया। फिर उन्होंने उस अंगरखे को अपने पिता के पास भेज दिया। याकूब ने उसे पहचान लिया और यह मान लिया कि उसके प्यारे पुत्र को किसी जंगली जानवर ने मार डाला है। और उसने यूसुफ के लिए बहुत दिनों तक शोक मनाया।

याद करें :

यूहन्ना 1:11 वह अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया।

प्रश्न :

1. याकूब के कितने पुत्र थे?
2. यूसुफ के भाई उससे क्यों घृणा करते थे?
3. यूसुफ ने कौन से स्वप्न देखे?
4. याकूब ने यूसुफ को कहाँ भेजा?
5. वहाँ उसके साथ क्या हुआ?

❊ ❊ ❊

पाठ–11

यूसुफ – बंदीगृह में

(उत्पत्ति 39 व 40)

मुख्य बिंदु :

1. एक दास के रूप में यूसुफ अपने स्वामी के प्रति बहुत विश्वस्त था और परमेश्वर उसके साथ था।
2. एक कैदी के रूप में भी यूसुफ विश्वस्त बना रहा, और परमेश्वर ने उसे आशीष दी।
3. वह परमेश्वर के संपर्क में रहता था।
4. वह दूसरों के लिए सहायक था।

पाठ :

यूसुफ एक गुलाम के रूप में मिस्र पहुँचा और वहाँ फिरौन के एक बड़े अधिकरी ने उसे खरीदा। आज हम सीखेंगे कि पोतीपर के घर पर यूसुफ के साथ क्या हुआ। उस समय यूसुफ मात्र सत्रह वर्ष का था। वह अमीर पिता का प्रिय पुत्र था जो बहुत अच्छी ज़िंदगी जी रहा था। परन्तु अब वह एक दूसरे देश में था और गुलाम था। उसे कठिन परिश्रम करना पड़ता था, परन्तु उसने कभी शिकायत नहीं की। अपने स्वामी के घर में उसने अपने कार्य को अच्छी तरह और वफादारी से किया, और परमेश्वर का भय मानता रहा। पोतीपर समझ गया था कि परमेश्वर यूसुफ के साथ रहते हैं। उसने यूसुफ को इतना पसंद किया कि उसे अपने घर का और अपनी सारी सम्पत्ति का अधिकारी बना दिया। यूसुफ के कारण परमेश्वर ने उस मिस्री के घर पर और संपत्ति पर आशीष दी।

पोतीपर की पत्नी अच्छी स्त्री नहीं थी। उसने प्रयत्न किया कि यूसुफ गलत कार्य करे और अपने स्वामी पोतीपर को धोखा दे। परमेश्वर के बच्चों के सामने भी गलत कार्य करने की परीक्षा आती है। ऐसे समय में हमें परमेश्वर की ओर देखना चाहिए और पाप से दूर रहना

चाहिए। यूसुफ ने भी यही किया। जब यूसुफ ने उसकी बात नहीं मानी, तब उसे बहुत गुस्सा आया और उसने पोतीपर से यूसुफ की झूठी शिकायत की। पोतीपर ने अपनी पत्नी की बात मानी और यूसुफ को जेलखाने में डलवा दिया।

यूसुफ कैदखाने में था, परन्तु वहाँ भी परमेश्वर उसके साथ रहे। हम किसी भी परिस्थिति में हों, परमेश्वर हमारे साथ रहते हैं। और हमारी सहायता और अगुआई भी करते हैं। बंदीगृह के दारोगा ने यूसुफ को इतना पसंद किया कि उसने सब बंधुओं को यूसुफ के हाथ में सौंप दिया। एक दिन मिस्र का राजा फिरौन अपने राजमहल के दो अधिकारियों से नाराज हो गया जो राजा के पकानेवालों का प्रधान और पिलानेवालों का प्रधान था। उन्हें भी उस बंदीगृह में रखा गया जहाँ यूसुफ था।

एक दिन यूसुफ सुबह उनको देखने आया और देखा कि दोनों बहुत उदास हैं। यूसुफ ने उनसे उनकी उदासी का कारण पूछा। उन्होंने उससे कहा, ''हम दोनों ने अजीब स्वप्न देखा है, परन्तु उसका अर्थ बताने वाला कोई नहीं है।'' यूसुफ ने उनसे कहा कि स्वप्नों का अर्थ परमेश्वर ही बताते हैं। तुम मुझे अपना स्वप्न बताओ। तब पिलानेवालों के प्रधान ने कहा, ''मैंने स्वप्न में देखा, कि मेरे सामने एक दाखलता है, और उसमें तीन डालियाँ हैं। उनमें कलियाँ लगीं और वे फूलीं और उसके गुच्छों में दाख लग कर पक गईं। और फिरौन का कटोरा मेरे हाथ में था, और मैंने उन दाखों को फिरौन के कटोरे में निचोड़कर, कटोरे को फिरौन के हाथ में दिया।'' यूसुफ ने उससे कहा, इस स्वप्न का अर्थ है कि अब से तीन दिन के भीतर फिरौन तुम्हें वापस तुम्हारे पद पर नियुक्त करेगा। सो जब तेरा भला हो जाए, तब मुझे स्मरण करना, और मुझ पर कृपा करके फिरौन से मेरी चर्चा चलाना ओर यहाँ से मुझे छुड़वा देना।''

तब फिर पकाने वालों के प्रधान ने अपने स्वप्न का वर्णन किया, ''मैंने देखा कि मेरे सिर पर सफेद रोटी की तीन टोकरियाँ हैं, और ऊपर की टोकरी में फिरौन के लिए सब प्रकार की पकी हुई वस्तुएँ हैं।

और पक्षी मेरे सिर पर की टोकरी में से उन वस्तुओं को खा रहे हैं।'' यूसुफ ने उससे कहा, ''तेरे स्वप्न का अर्थ यह है कि, तीन दिन के भीतर ही तुम मार डाले जाओगे।''

यूसुफ ने उनके स्वप्न का जो अर्थ उनको बताया था, बिल्कुल वैसा ही उनके साथ हुआ। पिलानेवालों के प्रधान ने अपना पद वापस पाया, परन्तु वह यूसुफ को भूल गया। मनुष्य हमें भूल सकते हैं, परन्तु परमेश्वर हमें कभी नहीं भूलते।

याद करें :

भजन संहिता 46:1 परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट में अति सहज से मिलनेवाला सहायक।

प्रश्न :

1. यूसुफ ने पोतीपर के घर में रहकर, कैसे अपना कार्य किया?
2. वह जेलखाने में कैसे पहुँचा?
3. दारोगा उसके प्रति दयालु क्यों हुआ?
4. कैदखाने में डाले गए, फिरौन के अफसर कौन-कौन थे?
5. पिलानेवाले का स्वप्न क्या था?
6. पकानेवाले का स्वप्न क्या था?

❊ ❊ ❊

पाठ–12

मिस्र का शासक–यूसुफ

(उत्पत्ति 41)

मुख्य बिंदु :

1. जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं, उनको इस संसार में अनेक कष्ट हो सकते हैं।
2. परमेश्वर हमारे कष्टों में हमारे साथ रहेंगे यदि हम विश्वासयोग्य बने रहें।
3. यदि हम मसीह के साथ दु:ख उठाएँगे, तो हम स्वर्गराज्य के वारिस होंगे।
4. यदि हम प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो वह सदैव हमारे साथ रहकर हमारा सही मार्गदर्शन करेंगे।

पाठ :

फिरौन के राजमहल में पिलानेवालों के प्रधान को अपनी पदवी वापस मिल गई थी, परन्तु वह यूसुफ को भूल गया। अत: उसकी ओर से यूसुफ को कोई सहायता प्राप्त नहीं हुई। तथापि, परमेश्वर ने यूसुफ को स्मरण रखा और उसको एक अद्‌भुत छुटकारा प्रदान किया।

दो वर्ष के बीतने पर, एक रात मिस्र के राजा फिरौन ने एक स्वप्न देखा, कि वह नील नदी के किनारे पर खड़ा है। और उस नदी में से सात सुंदर और मोटी–मोटी गायें निकलकर घास चर रही हैं। और उनके पीछे और सात गायें जो कुरूप और दुर्बल थीं, नदी में से निकलीं और उन सुंदर और मोटी सात गायों को खा गईं। तब फिरौन जाग गया। और वह फिर से सो गया और उसने एक और स्वप्न देखा, कि एक डंठी में से सात मोटी–मोटी और अच्छी बालें निकलीं। उनके बाद सात पतली और मुरझाई हुई बालें निकलीं। तब इन पतली और मुरझाई हुई बालों ने उन सात मोटी और अन्न से भरी हुई बालों को निगल लिया। तब

फिरौन उठा और अपने स्वप्नों के कारण बहुत व्याकुल हो गया।

फिरौन ने मिस्र के सब ज्योतिषियों और पंडितों को बुलवाया और उनको अपने स्वप्न बताए। परन्तु कोई भी फिरौन के स्वप्नों का अर्थ बता न सका। तब पिलानेवालों के प्रधान ने राजा से कहा, ''आज मुझे अपनी गलती याद आई है। दो वर्ष पूर्व जब मैं कैदखाने में था, तब एक रात हममें से दो लोगों ने एक-एक स्वप्न देखा। तब वहाँ एक इब्री जवान था जिसने हमारे स्वप्नों का अर्थ बताया था, और हमारे साथ बिल्कुल वैसा ही हुआ।'' तब फिरौन ने यूसुफ को बंदीगृह से बुलवाया। तब वह बाल बनवाकर और वस्त्र बदलकर फिरौन के सम्मुख उपस्थित हुआ। फिरौन ने यूसुफ से कहा, ''मैंने सुना है कि तू स्वप्नों के अर्थ बता सकता है।'' यूसुफ ने फिरौन से कहा, ''मैं तो कुछ नहीं जानता, परमेश्वर ही फिरौन के लिए शुभ वचन देगा।'' ध्यान दो बच्चों, कि कैसे यूसुफ ने सारी महिमा परमेश्वर को दी। और परमेश्वर ने उसे स्वप्नों के अर्थ बताए।

फिरौन से स्वप्न सुनने के पश्चात् यूसुफ ने राजा से कहा, ''दोनों स्वप्नों का अर्थ एक ही है। परमेश्वर जो कार्य करने वाले हैं, उसे उसने फिरौन को बताया है। सात मोटी गायें और सात अच्छी बालें बहुतायत के सात वर्ष हैं और सात दुर्बल गायें और सात मुरझाई हुई बालें अकाल के सात वर्ष हैं। अगले सात वर्ष बहुतायत की उपज होगी और उसके पश्चात् के सात वर्ष भयंकर अकाल के होंगे जिसमें सुकाल फिर स्मरण न रहेगा। और फिरौन ने जो यह स्वप्न दो बार देखा है, इसका भेद यही है, कि यह बात परमेश्वर की ओर से नियुक्त हो चुकी है। और परमेश्वर इसे शीघ्र ही पूरा करेगा।''

फिर यूसुफ ने राजा को सलाह दी, कि किसी समझदार और बुद्धिमान पुरुष को ढूँढ़कर उसे मिस्र देश पर प्रधानमंत्री ठहराए। और जब तक सुकाल के सात वर्ष रहें, तब तक वह मिस्र देश की उपज का पंचमांश लेकर, नगर-नगर में भण्डार घर बनाकर उसमें जमा करता रहे। उसे आने वाले अकाल के वर्षों के लिए, फिरौन की आधीनता में सुरक्षित

रखा जाए।''

फिरौन और उसके सारे कर्मचारियों को यह बात अच्छी लगी। फिरौन ने यूसुफ से कहा, ''परमेश्वर ने जो तुझे इतना ज्ञान दिया है, कि तेरे तुल्य कोई समझार और बुद्धिमान नहीं। इसलिए तू मेरे घर का अधिकारी होगा और तेरी आज्ञा के अनुसार मेरी सारी प्रजा चलेगी। केवल राजगद्दी के विषय में, मैं तुझ से बड़ा ठहरूँगा। मैं तुझ को मिस्र के सारे देश के ऊपर अधिकारी ठहरा देता हूँ।'' तब फिरौन ने अपने हाथ से अंगूठी निकालकर यूसुफ के हाथ में पहना दी, और उसको मलमल के वस्त्र पहिना दिए। उसके गले में सोने की जंजीर डाल दी, और उसको अपने दूसरे रथ पर चढ़वाया। लोग उसके आगे-आगे यह प्रचार करते चले, कि घुटने टेककर दण्डवत् करो। फिरौन ने यूसुफ को सारे देश के ऊपर प्रधान मंत्री ठहराया।

जैसा यूसुफ ने कहा, बिल्कुल वैसा ही हुआ। पहले के सात वर्ष बहुतायत से उपज हुई और यूसुफ ने बड़े-बड़े भण्डार घर बनाकर उनको अनाज से भर दिया। उसके पश्चात् जब अकाल के सात वर्ष आए तब यूसुफ ने लोगों को अनाज बेचना शुरू कर दिया। अन्य देशों के लोग भी अनाज खरीदने के लिए मिस्र देश आने लगे। यूसुफ ने उन सबको अनाज बेचा और उससे प्राप्त सारा धन फिरौन को दे दिया।

यूसुफ का जीवन प्रभु यीशु मसीह की तस्वीर है। जिस प्रकार यूसुफ के भाइयों ने उसे परदेशियों के हाथ बेच दिया था, उसी प्रकार प्रभु यीशु मसीह भी अपने ही लोगों के द्वारा तिरस्कृत किए गए और बेचे गए। तथापि, परमेश्वर के नियत समय पर प्रभु भी समस्त राष्ट्रों पर शासक होंगे। जो लोग अभी प्रभु यीशु पर विश्वास करेंगे, वे लोग प्रभु के राज्य की आशीषों के भागीदार होंगे। यूसुफ का जीवन हमें सिखाता है, कि परमेश्वर सदैव अपने लोगों की सुधि लेते हैं, चाहे उन्हें कष्ट उठाना पड़े। कैदखाने में रहकर भी यूसुफ परमेश्वर के प्रति विश्वसनीय रहा। और परमेश्वर ने यूसुफ के साथ रहकर उसे उत्तम प्रतिफल दिया।

याद करें :

1 पतरस 5:6 परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिससे वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए।

प्रश्न :

1. फिरौन का पहला स्वप्न क्या था?
2. फिरौन का दूसरा स्वप्न क्या था?
3. फिरौन को स्वप्नों का अर्थ किसने बताया?
4. स्वप्नों का क्या अर्थ था?
5. यूसुफ को क्या प्रतिफल प्राप्त हुआ?

❊ ❊ ❊

पाठ-13

मूसा का जन्म

(निर्गमन 2:1-10)

मुख्य बिंदु :

1. फिरौन ने इस्राएलियों को अपना गुलाम बनाया। शैतान ने समस्त मनुष्य जाति को अपना गुलाम बनाया।
2. मूसा जीवित बच गया क्योंकि उसके माता-पिता परमेश्वर पर विश्वास करते थे। (इब्रानियों 11:23)।
3. मूसा के लिए परमेश्वर की एक योजना थी। परमेश्वर हर समय उसकी देखभाल कर रहे थे।

पाठ :

बच्चों, आज हम एक इब्री बालक के विषय में सीखेंगे, जिसका जन्म और पालन-पोषण मिस्र में हुआ।

यूसुफ जब मिस्र का शासक था, तब कनान से उसके भाई अन्न मोल लेने के लिए उसके पास आए। उन्होंने यूसुफ को दण्डवत् किया और उससे अन्न खरीदा। जब वे दूसरी बार अन्न खरीदने मिस्र आए, तब यूसुफ ने उन्हें अपनी पहचान बताई। तत्पश्चात् उसका पिता और उसके भाई और उनके परिवार मिस्र में आकर बस गए। अकाल के वर्षों में उनकी अच्छी देखभाल हुई और वे वहीं बस गए। मिस्र में रहते हुए याकूब, यूसुफ और उसके भाइयों की मृत्यु हो गई, परन्तु उनके परिवार गिनती में बहुत बढ़ गए।

एक बार परमेश्वर ने याकूब का नाम बदलकर ''इस्राएल'' रखा था। इस कारण उसका पूरा वंश ''इस्राएल की संतान'' कहलाया। उससे पहले उन्हें इब्री कहा जाता था, और वे इब्रानी भाषा बोलते थे। जब एक नया राजा गद्दी पर बैठा, जो यूसुफ को नहीं जानता था, तब उसने कहा, ''ये इस्राएली लोग संख्या में हमसे बहुत अधिक हो गए हैं, और

यदि युद्ध हो, तो वे हमारे शत्रुओं के साथ मिलकर हमसे युद्ध कर सकते हैं।'' फिरौन ने उनकी संख्या को बढ़ने से रोकने का निर्णय लिया। उसने उन्हें गुलाम बनाकर उनसे कठिन मज़दूरी करवाई। उन्हें शहर का निर्माण करना था, और उनके अधिकारी उन्हें क्रूरता से मारते थे। तथापि, वे संख्या में बढ़ते रहे। तब फिरौन ने आज्ञा दी, कि उनके नवजात लड़के नदी में फेंक दिए जाएँ।

उन दिनों में अम्राम नाम एक पुरुष और उसकी पत्नी योकेबेद भी मिस्र देश में रहते थे। उनको एक सुंदर पुत्र उत्पन्न हुआ। उसकी माँ ने उसको जीवित बचाने का निश्चय किया। परमेश्वर पर विश्वास करते हुए उसने बालक को तीन महीने तक छिपाकर रखा। जब वह उसे और छिपा न सकी, तब उसने सरकंड़ों की एक टोकरी लेकर उस पर चिकनी मिट्टी और राल लगाई, ताकि उसके अंदर पानी न जा सके। फिर उसने बालक को उसमें रखा और नील नदी के कांसों के बीच छोड़ आई। उस बालक की बड़ी बहन छिपकर देखती रही कि उसके साथ क्या होगा। तभी फिरौन की पुत्री स्नान करने के लिए नदी के तीर पर आई। उसने वह टोकरी देखी और उसे लाने के लिए अपनी दासी को भेजा। जब उसने टोकरी खोली तब बालक रोने लगा। फिरौन की बेटी जानती थी कि वह बालक इब्री है, परन्तु उसे उस बालक पर तरस आ गया। उसने बालक को सुरक्षित रखने का निर्णय लिया। तभी उस बालक की बहन ने आकर पूछा, ''क्या मैं जाकर इब्री स्त्रियों में से किसी धाई को बुला लाऊँ?'' फिरौन की बेटी की अनुमति पाकर वह गई और बालक की माता को बुलाकर लाई। फिरौन की बेटी ने उससे कहा, ''तू इस बालक को ले जाकर मेरे लिए दूध पिलाया कर, और मैं तुझे मज़दूरी दूँगी।''

परमेश्वर की अद्‌भुत योजना के अनुसार बालक अपनी माता की सुरक्षा में रहा, और उसे इसकी मज़दूरी भी मिली। उसे पालते समय उसकी माता ने उसे समझाया कि वह कौन है। और जीवित परमेश्वर और चुने हुए लोगों के बारे में भी शिक्षा दी। इसी कारण बड़े होने पर वह परमेश्वर और उनकी प्रजा के प्रति एक निर्णय ले सका।

जब बालक कुछ बड़ा हुआ, तब वह उसे फिरौन की बेटी के पास ले गई और वह उसका बेटा ठहरा। और उसने यह कहकर उसका नाम **मूसा** रखा, कि ''मैंने इसको जल से निकाला।''

मूसा राजमहल में रहा और उसे मिस्र की सर्वोत्तम शिक्षा दी गई।

याद करें :

1 पतरस 5:7 अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है।

प्रश्न :

1. याकूब और उसका परिवार मिस्र में रहने के लिए क्यों आए?
2. नवजात लड़कों के लिए फिरौन की आज्ञा क्या थी?
3. मूसा कैसे जीवित बच गया?
4. किसने दूध पिलाकर उसको पाला?

❉ ❉ ❉

पाठ–14

जलती हुई झाड़ी

(निर्गमन 2:11–4:15)

मुख्य बिंदु :

1. मिस्र के सुखों और अपने लोगों के साथ कष्ट उठाने के, दो विकल्पों में से मूसा ने चुनाव किया।
2. परमेश्वर अपने लोगों के कष्टों को जानते थे और परमेश्वर ने उनकी प्रार्थनाओं को सुना।
3. इस्राएलियों को कष्ट उठाना आवश्यक था, अन्यथा वे मिस्र देश छोड़ने के इच्छुक न होते।
4. मूसा ने परमेश्वर से कहा कि वह बोलने में भद्दा है, परन्तु जब उसने परमेश्वर की आज्ञा मानी, तब परमेश्वर ने उसे एक महान भविष्यद्वक्ता बनाया।

पाठ :

चालीस वर्ष के होने तक मूसा फिरौन के राजमहल में रहा। उसने मिस्र के समस्त बुद्धि और ज्ञान की शिक्षा प्राप्त की। परन्तु उसने मिस्र के देवताओं की या मूर्तियों की आराधना नहीं की। वह जीवते परमेश्वर पर विश्वास करता था, जो इस्राएल का परमेश्वर था। इस कारण उसने निश्चय किया, कि परमेश्वर को न जानने वाले लोगों के साथ, आराम के जीवन का आनंद उठाने के बजाय, वह अपने जाति भाइयों की सहायता करेगा, और परमेश्वर से आशीष प्राप्त करेगा।

एक दिन उसने देखा कि एक मिस्री पुरुष एक इब्री पुरुष को मार रहा है। उसने सोचा कि कोई नहीं देख रहा, और उसने उस मिस्री को मार डाला। और उसको रेत में छिपा दिया। अगले दिन उसने दो इब्रियों को आपस में मारपीट करते देखकर, गलती करने वाले से कहा, ''तू अपने भाई को क्यों मारता है?'' उसने कहा, ''किसने तुझे हम लोगों पर

न्यायी और शासक बनाया है? क्या उस मिस्री की तरह तू मुझे भी मार डालना चाहता है?''

यह सुनकर मूसा डर गया, कि निश्चय यह बात सबको पता चल गई। जब फिरौन ने यह सुना तब उसने मूसा को मार डालने का प्रयत्न किया। परन्तु मूसा फिरौन के सम्मुख से भागा और मिद्यान देश में जाकर रहने लगा। वहाँ यित्रो नाम के एक याजक के यहाँ रहा जो परमेश्वर की आराधना करता था। उसने अपनी सात बेटियों में से एक का विवाह मूसा के साथ कर दिया। मूसा मिद्यान में रहकर अपने ससुर की भेड़-बकरियाँ चराता था।

कुछ समय के पश्चात् मिस्र के राजा फिरौन की मृत्यु हो गई, और एक नया फिरौन गद्दी पर बैठा। मूसा चालीस वर्ष तक मिद्यान में रहा। तब होरेब पर्वत पर परमेश्वर ने उससे बातें कीं। एक दिन मूसा ने देखा कि एक झाड़ी में आग की लौ उठ रही है। परन्तु वह झाड़ी भस्म नहीं होती। उसे देखने मूसा उसके करीब गया। तब परमेश्वर ने झाड़ी के बीच में से उसको पुकारा, ''हे मूसा, हे मूसा।'' मूसा ने कहा, ''क्या आज्ञा?'' परमेश्वर ने उससे कहा, ''इधर पास मत आ। और अपने पाँवों से जूतियाँ उतार दे। क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है, वह पवित्र भूमि है। मैं तेरे पिता का परमेश्वर, और इब्राहीम का परमेश्वर और इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूँ।'' तब मूसा डर गया और उसने अपना मुँह ढाँप लिया।

तब परमेश्वर ने कहा, ''मैंने अपनी प्रजा के लोग जो मिस्र में हैं, उनके दुख को देखा है, और उनकी चिल्लाहट जो परिश्रम करानेवालों के कारण होती है, उसको भी मैंने सुना है। और उनकी पीड़ा पर मैंने चित्त लगाया है। और अब मैं तुझे फिरौन के पास भेजता हूँ, कि तू मेरी इस्राएली प्रजा को मिस्र से निकाल ले आए।''

मूसा घबरा गया। वह मिस्र जाने से डरता था। उसने कहा, ''मैं यह कार्य कैसे कर सकता हूँ? मेरे अपने ही लोग मुझ पर विश्वास नहीं करेंगे। और वे पूछेंगे कि किसने तुझे भेजा है।'' परमेश्वर ने कहा, ''तुम

जाकर उनसे कहना, कि तुम्हारे पितरों के परमेश्वर ने मुझे भेजा है। इसलिए अब जाकर इस्राएली पुरनियों को इकट्ठा करके उनसे कहो कि यहोवा ने मुझे दर्शन देकर कहा है, कि 'मैं तुम्हें मिस्र देश से निकालकर, एक ऐसे अच्छे देश में पहुँचाऊँगा जहाँ दूध और मधु की धारा बहती है।' वे तुम्हारी बात सुनेंगे, और तुम उनके पुरनियों को लेकर फिरौन के पास जाना। और फिरौन से कहना 'इब्रियों के परमेश्वर ने हम से बातें की हैं। अतः अब हमें तीन दिन की यात्रा करके, मरुभूमि में जाकर बलिदान करके, परमेश्वर की आराधना करनी है।' मैं जानता हूँ कि फिरौन तुम्हें नहीं भेजेगा, अतः मैं उस पर दण्ड भेजूँगा ताकि वह तुम लोगों को जाने दे।''

परमेश्वर ने मूसा को दो चिह्न दिए कि वह उसे फिरौन और उसके लोगों के सामने दिखाए, ताकि वे समझ जाएँ कि परमेश्वर उसके साथ हैं। पहला, परमेश्वर ने मूसा से कहा, ''तेरे हाथ में जो लाठी है, उसे जमीन पर फेंक दे।'' उसने फेंका, और वह लाठी सर्प बन गई। तब परमेश्वर ने उससे कहा, ''उसकी पूँछ पकड़ ले।'' जब मूसा ने उसकी पूँछ पकड़ी, तब वह फिर से लाठी बन गई। दूसरा चिह्न जो परमेश्वर ने मूसा को दिया वह यह था, कि परमेश्वर ने मूसा से कहा, ''अपना हाथ छाती पर रखकर ढाँप।'' तब मूसा ने अपना हाथ छाती पर रखकर ढाँप लिया। फिर जब उसे निकाला, तब क्या देखा कि उसका हाथ कोढ़ के कारण हिम के समान श्वेत हो गया है। तब परमेश्वर ने कहा, ''अपना हाथ फिर से रखकर ढाँप।'' तब मूसा ने अपना हाथ फिर से ढाँप लिया, और फिर जब निकाला, तब देखा कि उसका हाथ पहले जैसा ही हो गया था।

फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा, ''यदि वे लोग इन दोनों चिह्नों की प्रतीति न करें, तब तू नील नदी में से कुछ जल लेकर सूखी भूमि पर डालना, और वह लहू बन जाएगा।'' फिर भी मूसा ने परमेश्वर से विनती की, ''मैं ठीक से बोल नहीं सकता, किसी और को भेज दे।'' तब परमेश्वर मूसा से क्रोधित हो गए, परन्तु उसके भाई हारून को उसके साथ भेज दिया और कहा, ''मैं उसके मुख के संग और तेरे मुख

के संग होकर जो कुछ तुम्हें कहना होगा, वह तुम्हें सिखाता जाऊँगा।''

याद करें :

भजन संहिता 68:20 वही हमारे लिए बचाने वाला ईश्वर ठहरा।

प्रश्न :

1. मूसा के सामने चुनाव के कौन से विकल्प थे? उसने क्या चुना?
2. होरेब पर्वत पर उसने कौन सी अद्‌भुत बात देखी?
3. मूसा के लिए परमेश्वर का संदेश क्या था?
4. कौन से दो चिह्न परमेश्वर ने मूसा को दिए, ताकि लोग विश्वास करें कि उसे परमेश्वर ने भेजा है?
5. परमेश्वर का वायदा क्या था?

❊ ❊ ❊

पाठ–15

लाल समुद्र

(निर्गमन 14)

मुख्य बिंदु :

1. हमारा कुड़कुड़ाना, परिस्थिति में परिवर्तन नहीं लाएगा। हमें अपनी समस्याओं को परमेश्वर को सौंपना चाहिए।
2. संकट में हमें परमेश्वर पर विश्वास करना चाहिए, जो हमारे छुटकारे का मार्ग बनाएँगे।
3. हमें अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए।

पाठ :

परमेश्वर ने मिस्र देश पर नौ विपत्तियाँ भेजीं। फिर भी फिरौन ने इस्राएलियों को जाने नहीं दिया। अंत में परमेश्वर ने आधी रात को एक मृत्यु के दूत को भेजा, और मिस्रियों के हर एक घर के पहिलौठे मार डाले गए। परमेश्वर ने मूसा को बताया, ''आधी रात को मैं मिस्र देश के बीच में होकर चलूँगा, और मिस्र के सभी पहिलौठों को मारूँगा, चाहे वह मनुष्य के हों अथवा पशुओं के। और मैं मिस्र के सारे देवताओं को भी दण्ड दूँगा।''

इस्राएलियों से कहा गया था कि वे एक मेम्ने को मारकर उसका लहू अपने घरों के द्वार के दोनों अलंगों और चौखट के सिरे पर लगाएँ। और सुबह तक अपने घरों से बाहर न जाएँ। और मृत्यु का दूत उन घरों को छोड़कर आगे बढ़ जाएगा, जिन घरों पर लहू लगा होगा, और उनके पहिलौठे सुरक्षित बचे रहेंगे।

उस रात, परमेश्वर के दूत ने मिस्र के सभी पहिलौठों को मार डाला। फिरौन के पहिलौठे से लेकर उसके दासों तक के पहिलौठे और उनके पशुओं के पहिलौठे भी मार डाले गए। फिरौन रात को ही उठ बैठा, उसके सब कर्मचारी और सारे मिस्री उठे, और मिस्र में बड़ा

हाहाकार मचा, क्योंकि एक भी ऐसा घर न था जिसमें कोई मरा न हो। तब फिरौन और उसके लोगों ने शीघ्रता से इस्राएलियों को मिस्र से निकाल दिया और जो कुछ उन्होंने माँगा वह सब उनको दे दिया। इस्राएलियों की अगुआई करने के लिए, परमेश्वर बादल के खंभे में होकर उनके आगे-आगे चले। बादल से उन्हें दिन की भयंकर धूप में छाँव मिली, और रात को परमेश्वर आग के खंभे में होकर उनके आगे चले कि उन्हें प्रकाश मिले। परमेश्वर ने लाल समुद्र के तट तक इस्राएलियों की अगुआई की, और उन्होंने वहाँ डेरे डाले। अगले दिन फिरौन का मन बदल गया और उसने अपना रथ जुतवाया और अपनी सेना समेत इस्राएलियों का पीछा किया। फिरौन की सेना को अपनी तरफ आते देखकर इस्राएली अत्यंत भयभीत हो गए। उन्होंने चिल्लाकर परमेश्वर से प्रार्थना की, और मूसा को दोष देकर बोले, ''तू क्यों हमें यहाँ लेकर आया है? हमारे लिए यहाँ जंगल में मर जाने से अच्छा यह होता कि हम मिस्रियों की सेवा करते।''

मूसा परमेश्वर पर विश्वास रखता था। उसने लोगों से कहा, ''डरो मत, खड़े-खड़े वह कार्य देखो जो परमेश्वर तुम्हारे लिए करेंगे। यहोवा तुम्हारे लिए लड़ेगा, और तुम इन मिस्रियों को फिर कभी न देखोगे।''

तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, ''लोगों से कहो कि यहाँ से आगे बढ़ें। और तू अपनी लाठी उठाकर अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ा, और वह दो भाग हो जाएगा, और इस्राएली समुद्र के बीच स्थल पर होकर पार चले जाएँगे।'' तब बादल का खंभा उनके आगे से उठकर उनके पीछे चला गया, और इस्राएलियों और मिस्रियों की सेना के बीच में ठहर गया। मूसा ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया और जल दहिनी और बाईं ओर दीवार की तरह ठहर गया और बीच में सूखी भूमि हो गई। तब सब इस्राएली स्थल पर होकर पार निकल गए और आग का खंभा उन्हें प्रकाश देता रहा। बादल के दूसरी तरफ अंधकार था, जिसके कारण मिस्री कुछ देख न सके। उन्होंने इस्राएलियों का पीछा किया और समुद्र के बीच में चले गए। परन्तु परमेश्वर ने उन्हें घबरा दिया, और उनके रथों के पहियों को निकाल दिया, कि वे आगे न जा सकें। जब सारे

इस्राएली पार चले गए तब परमेश्वर के कहने पर मूसा ने समुद्र के ऊपर अपना हाथ बढ़ाया, और जल वापस अपने स्थान पर आ गया और मिस्रियों की सेना समुद्र में डूब गई।

इस्राएलियों ने देखा कि कितने अद्‌भुत रीति से परमेश्वर ने उन्हें बचाया। उन्होंने परमेश्वर की स्तुति गाई। सारी स्त्रियों ने भी मूसा की बहिन मरियम के साथ मिलकर परमेश्वर की स्तुति के गीत गाए। इतिहास में पहली बार, इतने सारे लोगों ने एक साथ मिलकर, परमेश्वर की सामर्थ्य और प्रभुत्व का विजय गीत गाया।

याद करें :

यशायाह 43:2 जब तू जल में होकर जाए, मैं तेरे संग-संग रहूँगा।

प्रश्न :

1. फिरौन ने इस्राएलियों को क्यों जाने दिया?
2. उसने फिर उनका पीछा क्यों किया?
3. इस्राएलियों ने कहाँ डेरे डाले?
4. लाल समुद्र के तट पर इस्राएलियों पर क्या संकट आया?
5. लोगों ने मूसा के विरोध में क्या कहा?
6. इस्राएलियों ने लाल समुद्र कैसे पार किया?
7. उस पार पहुँचने पर इस्राएलियों ने क्या किया?

❊ ❊ ❊

पाठ-16

मारा और एलीम

(निर्गमन 15:22-27)

मुख्य बिंदु :

1. कठिन परिस्थितियों में हमें परमेश्वर के समीप आना चाहिए।
2. परमेश्वर हमारी कड़वाहट को मिठास में परिवर्तित कर सकते हैं।
3. कठिनाइयों में बुड़बुड़ाने के बदले हमें परमेश्वर से सहायता माँगनी चाहिए।
4. प्रभु यीशु मसीह ही हमारे दुखों को आनंद में परिवर्तित करते हैं।

पाठ :

आज हम उन दो स्थानों के बारे में सीखेंगे जहाँ इस्राएलियों ने अपनी मरुभूमि की यात्रा के दौरान डेरे डाले। लाल समुद्र से चलकर आगे मरुभूमि में उन्होंने अपनी यात्रा आरंभ की। मरुभूमि की यात्रा अत्यंत कठिन होती है। अक्सर बहुत गर्मी रहती है और भोजन व पानी की कमी होती है।

तीन दिनों तक उन्हें पीने के लिए पानी नहीं मिला। मारा नामक स्थान तक पहुँचने पर उनको बहुत प्यास लगी। अंततः उन्हें पानी मिला, परन्तु वे लोग पी न सके क्योंकि पानी खारा था। ''मारा'' का अर्थ है खारा या कड़ुवा।

इस्राएली लोग थके हुए और प्यासे थे। वे मूसा के विरुद्ध बुड़बुड़ाने लगे। ''हम क्या पीएँ?'' मूसा ने परमेश्वर से प्रार्थना की और परमेश्वर ने उसे उत्तर दिया। परमेश्वर ने मूसा को एक पौधा दिखाया। मूसा ने उसे काटकर पानी में डाला, और पानी मीठा हो गया।

परमेश्वर इस्राएलियों को एक पाठ सिखा रहे थे। मरुभूमि में उनकी प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति वे करने वाले थे। उस स्थान पर परमेश्वर

ने उनके लिए एक नियम बनाया। और कहा, ''यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा का वचन तन मन से सुनकर आज्ञा माने, तो जितने रोग मैंने मिस्रियों पर भेजे हैं, उनमें से एक भी तुझ पर न भेजूँगा। मैं तुम्हारा चंगा करने वाला परमेश्वर हूँ।''

इस्राएलियों ने अपनी यात्रा जारी रखी और एलीम नामक स्थान पर पहुँचे। यह एक सुंदर जगह थी जहाँ पर पानी के बारह सोते और सत्तर खजूर के पेड़ थे। उन्होंने वहाँ जल के पास डेरे डाले। यहोवा हमारा चरवाहा है, जो हमें हरी चराइयों और सुखदाई जल के झरने के पास ले चलता है।

याद करें :

भजन संहिता 103:5 वही तो तेरी लालसा को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है।

प्रश्न :

1. लाल समुद्र पार करने के पश्चात् इस्राएलियों को पानी कहाँ मिला?
2. वहाँ पर क्या समस्या थी?
3. लोगों ने क्या किया?
4. मूसा ने क्या किया?
5. परमेश्वर ने मूसा को जो पौधा दिखाया, वह क्या दर्शाता है?
6. ''एलीम'' से हम क्या पाठ सीखते हैं?

❋ ❋ ❋

पाठ–17

मन्ना

(निर्गमन –16)

मुख्य बिंदु :

1. परमेश्वर के विरुद्ध बुड़बुड़ाना पाप है।
2. इस्राएलियों के बुड़बुड़ाने के बावजूद परमेश्वर ने उनको भोजन उपलब्ध कराया।
3. मन्ना हमें हमारे प्रभु यीशु का स्मरण दिलाता है। उन्होंने कहा, ''जीवन की रोटी मैं हूँ।''

पाठ :

आज हम सीखेंगे कि कैसे परमेश्वर ने मरुभूमि में अपने लोगों को भोजन दिया। इस्राएली एलीम से चलकर सीन नामक स्थान पर पहुँचे। वहाँ उनको भोजन नहीं मिला। वे बुड़बुड़ाने लगे, ''काश कि हम मिस्र में ही परमेश्वर के हाथ से मार डाले जाते! वहाँ हम माँस की हांड़ियों के पास बैठकर मनमाना भोजन खाते थे। परन्तु तुम हमें इस जंगल में लाए हो ताकि सारे समाज को भूखों मार डालो।'' परमेश्वर ने यह सुना और मूसा से कहा, ''मैं आकाश से तुम लोगों के लिए भोजन वस्तु बरसाऊँगा। और ये लोग प्रतिदिन का भोजन इकट्ठा करेंगे। इससे मैं उनकी परीक्षा करूँगा कि वे मेरी व्यवस्था पर चलेंगे या नहीं।''

तब मूसा और हारून ने सारे इस्राएलियों से कहा, ''सांझ को तुम जान लोगे कि जो तुम को मिस्र देश से निकाल ले आया है, वह यहोवा है। और भोर को तुम्हें यहोवा का तेज दिखाई देगा, क्योंकि तुम जो यहोवा पर बुड़बुड़ाते हो, उसे वह सुनता है। और हम क्या हैं कि तुम हम पर बुड़बुड़ाते हो?''

जब हारून इस्राएलियों की सारी मण्डली से बातें कर रहा था, तब उन्होंने जंगल की तरफ दृष्टि की, और बादल में यहोवा का तेज देखा।

और अपने वचन के अनुसार परमेश्वर ने सवेरे स्वर्ग से उनको भोजन दिया। जब घास पर से ओस सूख गई, तब उन्होंने भूमि पर छोटे-छोटे सफेद छिलके पड़े हुए देखे। वे पाले के किनकों के समान दिखते थे, परन्तु उन्होंने उसे पहले कभी नहीं देखा था। वे आपस में कहने लगे, ''यह क्या है?'' इसलिए वह वस्तु ''मन्ना'' कहलाया, जिसका अर्थ है ''यह क्या है?'' उन्होंने उसे चखा, और वह शहद की तरह मीठा था। परमेश्वर ने कहा, ''प्रतिदिन सवेरे लोग बाहर जाकर अपनी अपनी प्रतिदिन की आवश्यकता के अनुसार मन्ना बटोरें। परन्तु छठवें दिन दो दिन के लिए बटोर लें, क्योंकि सब्त के दिन वह नहीं मिलेगा।''

तथापि, कुछ लोगों ने आज्ञा नहीं मानी और उन्होंने अगले दिन के लिए मन्ना बचा कर रखा, परन्तु उसमें कीड़े पड़ गए। परन्तु परमेश्वर की आज्ञानुसार छठवें दिन उन्होंने अगले दिन के लिए भी मन्ना बचा के रखा, और वह खराब नहीं हुआ। कुछ लोग सब्त के दिन भी बाहर गए, परन्तु उन्हें मन्ना नहीं मिला।

इस्राएली लोगों ने चालीस वर्ष तक जंगल में यात्रा की। अपने वायदे के देश में पहुँचने तक उन्होंने मन्ना खाया। उस देश में पहुँचने के पश्चात् उन्होंने वहाँ की उपज में से खाया।

मन्ना प्रभु यीशु मसीह की तस्वीर है। उन्होंने कहा, ''जीवन की रोटी मैं हूँ।''

याद करें :

यूहन्ना 6:51 जीवन की रोटी, जो स्वर्ग से उतरी, मैं हूँ।

प्रश्न :

1. इस्राएली लोग एलीम से चलकर कहाँ गए?
2. उन्होंने शिकायत क्यों की?
3. परमेश्वर ने उन्हें भोजन कैसे दिया?
4. जीवन की रोटी कौन है?

❊ ❊ ❊

पाठ–18

शमूएल

(1 शमूएल, अध्याय 1–5)

मुख्य बिंदु :

1. परमेश्वर अपने बच्चों की सच्ची प्रार्थना को सुनते और उसका उत्तर देते हैं।
2. परमेश्वर हमें उससे कहीं अधिक देते हैं, जो हम उन्हें देते हैं।
3. परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए हमें उन पर विश्वास करना चाहिए और उनकी आज्ञा माननी चाहिए।
4. बचपन में ही प्रभु को जानना, सबसे बड़ी आशीष है।

पाठ :

आज हम एक लड़के के बारे में सीखेंगे, जिसका जन्म उसकी माता की प्रार्थना के कारण हुआ। इस्राएलियों के कनान देश में बस जाने के अनेक वर्षों बाद यह हुआ। एल्काना नाम का एक पुरुष था। उसकी पत्नी हन्ना बहुत दुखी थी क्योंकि उसके कोई संतान नहीं थी। प्रति वर्ष यह परिवार शीलो नामक स्थान को जाता था, कि परमेश्वर के भवन में जाकर आराधना करें। एली वहाँ का महायाजक था।

एक बार जब हन्ना बहुत दुखी थी, तब वह परमेश्वर के भवन में गई और रोते हुए प्रार्थना करने लगी, ''हे परमेश्वर, यदि आप मुझे एक पुत्र देंगे, तो मैं उसे उसके जीवन भर के लिए यहोवा को अर्पण करूँगी।'' हन्ना अपने मन में प्रार्थना कर रही थी, उसके होंठ तो हिल रहे थे परन्तु उसकी आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। इस कारण एली ने सोचा कि वह नशे में है। एली ने हन्ना से कहा, ''अपना नशा उतार।'' हन्ना ने उत्तर दिया, ''नहीं, हे मेरे प्रभु, मैं नशे में नहीं हूँ। मैं तो बहुत दुखी हूँ। मैं अपना दुख परमेश्वर को बता रही थी।''

परमेश्वर ने हन्ना की प्रार्थना सुनी। उसी वर्ष उसे एक पुत्र उत्पन्न

हुआ, और उसने उसका नाम शमूएल रखा, जिसका अर्थ है ''ईश्वर का सुना हुआ''।

जब शमूएल कुछ बड़ा हुआ, तब हन्ना उसे लेकर शीलो गई और उसे परमेश्वर के लिए अर्पित कर दिया। उसने एली से कहा, ''मैंने इस बालक के लिए प्रार्थना की थी, और परमेश्वर ने मेरी प्रार्थना सुनी। इसलिए अब मैं भी उसे उसके जीवन भर के लिए परमेश्वर को अर्पण कर देती हूँ।'' फिर शमूएल एली के साथ परमेश्वर के भवन में रहने लगा। और उसकी माता प्रति वर्ष जब अपने पति के साथ मेलबलि चढ़ाने मंदिर आती थी, तब उसके लिए एक छोटा सा बागा बनाकर लाती थी।

हन्ना ने शमूएल को परमेश्वर के लिए अर्पित कर दिया था, इस कारण परमेश्वर ने उसे आशीष देकर पाँच संतानें और दीं। देखो बच्चों, हम परमेश्वर को जो कुछ देते हैं, उससे कहीं ज़्यादा परमेश्वर हमें देते हैं।

शमूएल एक आज्ञाकारी बालक था, और परमेश्वर के भवन में वह अपना कार्य ईमानदारी से करता था। शमूएल बालक बढ़ता गया और परमेश्वर और मनुष्य दोनों उससे प्रसन्न रहते थे।

एक रात जब शमूएल मंदिर में सो रहा था, तब उसने सुना कि कोई उसे नाम लेकर पुकार रहा है। वह तुरंत उठकर भागा और एली से पूछा, ''क्या आज्ञा, आपने मुझे बुलाया है।'' एली ने कहा, ''नहीं, मैंने तुझे नहीं पुकारा, जा लेट जा।'' ऐसा तीन बार हुआ। एली समझ गया कि परमेश्वर शमूएल को पुकार रहे थे। तब एली ने शमूएल से कहा, ''यदि वह तुझे फिर पुकारे, तो तू कहना 'कह, क्योंकि तेरा दास सुन रहा है'।'' शमूएल ने एली की आज्ञा का पालन किया। परमेश्वर ने उसे फिर पुकारा, ''शमूएल! शमूएल!'' शमूएल ने उत्तर दिया, ''हे यहोवा कह, क्योंकि तेरा दास सुन रहा है।''

तब परमेश्वर ने शमूएल को बताया, कि एली के पुत्रों की दुष्टता के कारण मैं उसके परिवार पर दण्ड भेजूँगा। परमेश्वर एली से भी

क्रोधित थे, क्योंकि उसने अपने पुत्रों को गलत कार्य करने से नहीं रोका। परमेश्वर के वचन के अनुसार एली के दोनों पुत्र होप्नी और पीनहास युद्ध में एक साथ मारे गए। एली फाटक के पास कुर्सी पर बैठा था। इस बुरी खबर को सुनकर एली कुर्सी पर से पछाड़ खाकर गिर पड़ा। बूढ़े और भारी होने के कारण उसकी गर्दन टूट गई, और वह मर गया।

उस समय से, परमेश्वर अक्सर शमूएल से बातें करते थे। शमूएल परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता और याजक बन गया। उसने समस्त इस्राएल का न्याय किया।

याद करें :

नीतिवचन 22:6 लड़के को शिक्षा उसी मार्ग की दे, जिसमें उसको चलना चाहिए, और वह बुढ़ापे में भी उससे न हटेगा।

प्रश्न :

1. शमूएल के माता और पिता के क्या नाम थे?
2. हन्ना क्यों दुखी थी? और उसने क्या किया?
3. परमेश्वर ने हन्ना की प्रार्थना का उत्तर कैसे दिया?
4. ''शमूएल'' का क्या अर्थ है?
5. हन्ना ने शमूएल को किसके पास छोड़ा?
6. एली के परिवार के विषय में परमेश्वर ने शमूएल से क्या कहा?
7. बाद में शमूएल क्या बना?

❄ ❄ ❄

पाठ-19

दाऊद और गोलियत

(1 शमूएल 17)

मुख्य बिंदु :

1. बड़े कार्य करने के लिए परमेश्वर छोटे लोगों का और छोटी वस्तुओं का उपयोग करते हैं।
2. जो लोग वास्तव में परमेश्वर पर विश्वास करते हैं, वे दूसरों के लिए आशीष का कारण बनते हैं।
3. परमेश्वर अपने लोगों को छुटकारा देते हैं जब वे परमेश्वर पर विश्वास करके उनकी आज्ञा का पालन करते हैं।

पाठ :

आज हम एक चरवाहे लड़के के बारे में सीखेंगे, जिसने एक दानव को मार डाला।

जब शाऊल इस्राएल का राजा था, तब इस्राएलियों और पलिश्तियों के बीच युद्ध हुआ। पलिश्तियों की सेना में गोलियत नामक एक दानव था। वह सारे अस्त्र-शस्त्र पहिने हुए था। सारे इस्राएली उससे बहुत भयभीत थे।

गोलियत ने इस्राएलियों को ललकारा, ''अपने में से एक पुरुष को चुनकर मेरे पास भेजो। यदि वह मुझे मार डाले, तो हम तुम्हारे दास हो जाएँगे, और यदि मैं उसे मार डालूँ तो तुम सब हमारी सेवा करोगे।'' उसकी बातों को सुनकर शाऊल राजा और समस्त इस्राएली अत्यंत डर गए। उस दानव से लड़ने के लिए कोई भी आगे नहीं आया।

दाऊद नामक एक लड़का था, जो यिशै का सबसे छोटा पुत्र था। उसके सात भाई थे। उनमें से तीन शाऊल की सेना में थे। दाऊद अपने पिता की भेड़-बकरियाँ चराता था। वे बेतलेहेम के निवासी थे। एक दिन दाऊद के पिता ने उसके हाथ से, उसके उन भाइयों के लिए भोजन

भेजा, जो शाऊल की सेना में थे। उनके पास पहुँचकर दाऊद ने उनका कुशल क्षेम पूछा। जब वह बातें कर ही रहा था, तब गोलियत चढ़ आया और पहले की तरह ही इस्राएलियों को ललकारने लगा। दाऊद आश्चर्यचकित हो गया। उसने सैनिकों से इसके बारे में पूछा, ''वह पलिश्ती तो क्या है, कि जीवित परमेश्वर की सेना को ललकारे? जो उस पलिश्ती को मार के इस्राएलियों के अपमान को दूर करेगा, उसके लिए क्या किया जाएगा?''

राजा शाऊल ने यह सुना और दाऊद को बुलवाया। दाऊद ने राजा से कहा, ''मैं जाकर इस पलिश्ती से लडूँगा। उससे भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। जब मैं भेड़-बकरियाँ चराता था, तब एक शेर आया, और झुंड में से मेम्ना उठा ले गया। परन्तु मैंने उसका पीछा करके उसे मार डाला, और मेम्ने को छुड़ा लिया। वैसे ही मैंने भालू को भी मार डाला है। परमेश्वर ने जब मुझे सिंह और भालू के हाथ से छुड़ाया है, तो इस पलिश्ती के हाथ से भी छुड़ाएगा।'' दाऊद को निश्चय था कि परमेश्वर उसकी सहायता करेंगे। तब उसने अपनी लाठी हाथ में ली, और नाले में से पाँच चिकने पत्थर छाँटकर अपने झोले में रखे। और अपना गोफन हाथ में लेकर पलिश्ती के निकट चला।

जब उस दानव ने दाऊद को देखा, तो बहुत ही क्रोधित होकर उसने दाऊद से कहा, ''क्या मैं कुत्ता हूँ, जो तू लाठी लेकर मेरे पास आता है? मेरे पास आ, मैं तुझे मारकर तेरा माँस जंगली जानवरों को दे दूँगा।'' दाऊद ने पलिश्ती से कहा, ''तू तो तलवार और भाला लेकर मेरे पास आता है, परन्तु मैं सेनाओं के यहोवा के नाम से तेरे पास आता हूँ, जो इस्राएली सेना का परमेश्वर है। आज मैं तेरा सिर तेरे धड़ से अलग करूँगा, तब सब लोग जान लेंगे, कि इस्राएल का परमेश्वर ही एकमात्र जीवित परमेश्वर है।''

तब दाऊद ने अपनी थैली में हाथ डालकर एक पत्थर निकाला, और उसे गोफन में रखकर पलिश्ती के माथे पर ऐसा मारा कि पत्थर उसके माथे के भीतर घुस गया। और वह भूमि पर मुँह के बल गिर पड़ा। तब दाऊद दौड़कर उस पलिश्ती के ऊपर खड़ा हुआ, और उसकी तलवार

लेकर उसका सिर काट डाला।

यह देखकर, कि हमारा वीर मर गया है, पलिश्ती भाग गए। इस्राएली सेना ने पलिश्तियों का पीछा करके बहुतों को मार डाला। शाऊल और उसके लोग बहुत प्रसन्न हुए। इस्राएली नगरों से स्त्रियाँ निकलकर डफ और बाजे लिए हुए, आनन्द के साथ गाती और नाचती हुई दाऊद की प्रशंसा करती गईं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जब हम परमेश्वर पर पूर्ण रूप से विश्वास करते हैं, तब वह हमें गोलियत की तरह विशाल शत्रु पर भी विजय दिलाते हैं। परमेश्वर पर हमारे विश्वास को जब दूसरे लोग देखते हैं, तब वे भी परमेश्वर पर विश्वास करना सीखते हैं।

याद करें :

1 शमूएल 17:47 यहोवा तलवार या भाले के द्वारा जयवंत नहीं करता। क्योंकि संग्राम तो यहोवा का है।

प्रश्न :

1. दाऊद कौन था?
2. गोलियत कौन था?
3. दाऊद ने क्यों कहा, कि वह गोलियत को मार सकता है?
4. गोलियत को मारने के लिए दाऊद के पास कौन सा हथियार था?
5. दाऊद ने गोलियत का सिर किससे काटा?

❈ ❈ ❈

पाठ–20

एलिय्याह और कौवे

(1 राजा 17:1–7)

मुख्य बिंदु :

1. दण्ड देने के लिए परमेश्वर अकाल भेजते हैं।
2. अकाल में भी परमेश्वर उनकी देखभाल करते हैं, जो परमेश्वर पर विश्वास करते हैं और उनकी आज्ञा मानते हैं।
3. अपने लोगों के प्रति परमेश्वर की कुछ योजना होती है, जिसे वह सही समय पर प्रकट करते हैं।
4. परमेश्वर ही हैं जो हमारी आवश्यकता की पूर्ति करते हैं। इस कारण हमें परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए।

पाठ :

आज हम सीखेंगे, कि किस प्रकार अकाल में, परमेश्वर ने अपने भविष्यद्वक्ता एलिय्याह की देखभाल की। एलिय्याह एक भविष्यद्वक्ता था, जो लोगों को परमेश्वर की सेवा करना सिखाता था। परमेश्वर एलिय्याह से बातें करते थे, और एलिय्याह परमेश्वर की बातों को राजा और प्रजा तक पहुँचाता था। उस समय इस्राएलियों का राजा अहाब था जो बहुत ही दुष्ट था। उसने एक मूर्ति बनाई और उसकी आराधना करने लगा। अनेक इस्राएली भी राजा के पीछे चलकर मूर्तिपूजा करने लगे।

तब एलिय्याह ने परमेश्वर से प्रार्थना की, कि वर्षा न हो, ताकि लोगों को इसका दण्ड मिले। और वे समझ जाएँ कि मूर्ति उनके लिए कुछ नहीं कर सकती। उसने राजा के पास जाकर कहा, ''इन वर्षों में, मेरे बिना कहे, न तो मेंह बरसेगा, और न ओस पड़ेगी।'' अतः न वर्षा हुई और न कोई उपज। और भयंकर अकाल पड़ गया।

उन दिनों में अपनी दिव्य योजना के अनुसार परमेश्वर ने एलिय्याह की देखभाल की। परमेश्वर ने एलिय्याह से कहा, ''यरदन के सामने,

करीत नाम नाले के पास जाकर रह। मैंने कौवों को आज्ञा दी है, कि वे तुझे खिलाएँ।'' परमेश्वर ने कौवों की सृष्टि की है, और परमेश्वर उनसे वह कार्य करवा सकते हैं, जो वह चाहते हैं। अतः एलिय्याह ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया और नाले के किनारे जाकर रहने लगा, और वह उसका पानी पीता था। सवेरे और सांझ को कौवे उसके पास रोटी और मांस लाया करते थे। वर्षा न होने के कारण, कुछ दिनों में वह नाला सूख गया। तब परमेश्वर ने एलिय्याह को किसी और स्थान पर भेजा, जहाँ परमेश्वर ने उसकी देखभाल की।

हमें सदैव यह याद रखना चाहिए कि परमेश्वर ही हैं, जो वर्षा और धूप देते हैं। वे हमें भोजन देते हैं। यदि हम परमेश्वर पर विश्वास करके, उनकी आज्ञा मानेंगे, तो वे हमारी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करेंगे।

याद करें :

भजन संहिता 33:18 देखो, यहोवा की दृष्टि उसके डरवैयों पर, और उन पर जो उसकी करुणा की आशा करते हैं बनी रहती है।

प्रश्न :

1. अहाब ने कौन सा कार्य किया, जो बहुत ही गलत था?
2. राजा के लिए एलिय्याह का संदेश क्या था?
3. परमेश्वर ने एलिय्याह के लिए भोजन कैसे भेजा?
4. हमें भोजन कौन देता है?
5. हमें क्या करना चाहिए, जब परमेश्वर हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं?

❊ ❊ ❊

पाठ–21

ठट्‌ठा करने वाले लड़के

(2 राजा 2:23–24)

मुख्य बिंदु :

1. किसी का मज़ाक उड़ाना अच्छी बात नहीं है। यह पाप है।
2. हमारी जीभ शाप देने के लिए नहीं है, परन्तु परमेश्वर की स्तुति करने के लिए है।
3. परमेश्वर ठट्‌ठा करने वाले को दण्ड अवश्य देंगे।
4. हमें, परमेश्वर का भय मानने वालों का आदर करना चाहिए।

पाठ :

आज हम सीखेंगे कि किस प्रकार परमेश्वर ने, बेतेल के विवेकहीन और धर्मविरोधी लड़कों को दण्ड दिया, जिन्होंने परमेश्वर के संदेशवाहक का ठट्‌ठा उड़ाया।

एलीशा, एलिय्याह का शिष्य था। स्वर्ग पर उठाए जाने से पहले एलिय्याह ने परमेश्वर की आज्ञानुसार एलीशा का अभिषेक किया। एलिय्याह के बवंडर में ''ऊपर उठाए जाने'' तक एलीशा उसके साथ-साथ रहा। जब वे यरदन नदी के उस पार पहुँचे तब एलिय्याह ने एलीशा से कहा, ''जो कुछ तू चाहे वह माँग'' एलीशा ने कहा, ''तुझ में जो आत्मा है, उसका दूना भाग मुझे मिल जाए।''

परमेश्वर के वचन के अनुसार ही, एलिय्याह स्वर्ग पर चढ़ गया। एलीशा ने देखा, कि एक अग्निमय रथ और अग्निमय घोड़ों ने उनको अलग-अलग किया और एलिय्याह बवंडर में होकर स्वर्ग पर चढ़ गया। उसने वह चद्‌दर उठाई जो एलिय्याह के ऊपर से गिरी थी। उसे एलिय्याह की आत्मा का दुगना प्राप्त हुआ। वापस जाकर यरदन के तीर पर उसने एलिय्याह की चद्‌दर लेकर पानी पर मारा, और वह दो भाग हो गया और एलीशा बीच की सूखी भूमि से पार चला गया।

परमेश्वर ने तुरंत ही एलीशा के द्वारा आश्चर्यकर्म किए और एलीशा ने परमेश्वर के वचन को इस्राएलियों तक पहुँचाया। उसने इस्राएलियों को परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना सिखाया। एलीशा के वस्त्र सादे और सामान्य से थे। उसने कीमती और भड़कीले वस्त्रों का लालच कभी नहीं किया। उसके वस्त्र सांसारिक लोगों की दृष्टि में आकर्षक नहीं थे।

एक दिन एलीशा बेतेल को गया। और जब वह जा रहा था, तब नगर से छोटे लड़के निकलकर उसका मज़ाक उड़ाने लगे। (ये लड़के इतने बड़े थे कि वे जानते थे कि वे दुष्टतापूर्ण कार्य कर रहे थे।) उन्होंने एलीशा से कहा, "हे चन्दुए (गंजे) चढ़ जा, हे चन्दुए चढ़ जा।" उनका मतलब था कि, जिस प्रकार एलिय्याह स्वर्ग पर "चढ़ गया", वैसे ही वह भी स्वर्ग पर "चढ़ जाए"। एलीशा ने पीछे की ओर फिर कर उनको देखा, और यहोवा के नाम से उनको शाप दिया। तुरंत ही जंगल में से दो रीछनियों ने निकलकर उनमें से बयालीस लड़कों को मार डाला।

देखो बच्चों उन्हें कितना भयंकर दण्ड मिला। हमें कभी भी दूसरों का ठट्ठा नहीं उड़ाना चाहिए। हमें अपने माता-पिता, शिक्षकों और परमेश्वर के लोगों का आदर करना चाहिए।

याद करें :

नीतिवचन 30:17 जिस आँख से कोई अपने पिता पर अनादर की दृष्टि करे, और अपमान के साथ अपनी माता की आज्ञा न माने, उस आँख को तराई के कौवे खोद-खोद कर निकालेंगे, और उकाब के बच्चे खा डालेंगे।

प्रश्न :

1. एलीशा कौन था? किसने उसका अभिषेक किया?
2. एलीशा के द्वारा किया गया कौन सा एक आश्चर्यकर्म है, जो आज हमने सीखा?
3. एलीशा भविष्यद्वक्ता का किसने ठट्ठा किया? उन्होंने क्या कहकर उसका मज़ाक उड़ाया?
4. उनके साथ क्या हुआ?
5. इस पाठ से हम क्या सीखते हैं?

❊ ❊ ❊

पाठ–22

विधवा और तेल

(2 राजा 4:2–7)

मुख्य बिंदु :

1. हमारी सभी परेशानियों में, परमेश्वर हमारे सहायक हैं।
2. हमारे पास जो कुछ है, परमेश्वर हमारे लाभ के लिए और अपनी महिमा के लिए, उसका उपयोग करेंगे, चाहे वह बहुत ही कम हो।
3. हमें वह करना चाहिए, जो परमेश्वर हमसे कहते हैं।

पाठ :

एलिय्याह और एलीशा के अनेक जवान चेले थे। वे सब एक साथ रहते थे और अपने गुरु से शिक्षा प्राप्त करते थे। एलीशा के चेलों में से एक की अकाल मृत्यु हो गई। उसने किसी से बहुत उधार ले रखा था। उसकी पत्नी और दोनों पुत्र कर्ज में डूब गए। अब कर्जदार आया था कि अपने उधार के बदले उसके दोनों पुत्रों को गुलाम बनाने के लिए ले जाए। अतः वह विधवा एलीशा भविष्यद्वक्ता के पास गई, और उसे अपनी समस्या बताई। एलीशा ने उससे पूछा, ''मैं तेरे लिए क्या करूँ? मुझे बता कि तेरे घर में क्या है?'' उसने उत्तर दिया, ''तेरी दासी के घर में एक हांडी तेल को छोड़ और कुछ नहीं है।'' एलीशा ने उससे कहा, ''तू अपनी सब पड़ोसिनों से खाली बरतन माँग कर ला। फिर तू अपने बेटों समेत अपने घर में जा, और द्वार बंद करके उन सब बरतनों में तेल उण्डेल देना।'' वह गई और उसने वही किया, जो भविष्यद्वक्ता ने उससे कहा था। जब सारे बरतन तेल से भर गए तब उसने अपने बेटे से कहा, ''मेरे पास और बरतन ले आओ।'' उसने कहा कि अब और बरतन तो नहीं है। तब तेल थम गया। उस स्त्री ने जाकर एलीशा को बता दिया। तब उसने कहा, ''जा, तेल बेचकर अपना उधार चुका दे। और जो रह जाए, उससे तू अपने पुत्रों सहित अपना निर्वाह करना।''

यह निश्चित रूप से एक महान आश्चर्यकर्म था। परमेश्वर ने अपने भविष्यद्वक्ता के द्वारा यह कार्य किया था। उस थोड़े से तेल को परमेश्वर ने कई गुना बढ़ा दिया था। हमारे पास भी जो कुछ है, हमें वह परमेश्वर के हाथों में समर्पित करना चाहिए। वह हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करेंगे। यह आश्चर्यकर्म बंद दरवाज़े के पीछे हुआ। यह प्रार्थना को दर्शाता है। उस विधवा ने भविष्यद्वक्ता से विनती की, और फिर उसकी आज्ञानुसार दरवाज़ा बंद करके कार्य किया। उसकी तरह, हमें भी अपनी विनती और प्रार्थना को परमेश्वर के पास लाना चाहिए। वह हमारी प्रार्थना सुनेंगे।

याद करें :

भजन संहिता 23:5 तू ने मेरे सिर पर तेल मला है, मेरा कटोरा उमड़ रहा है।

प्रश्न :

1. वह विधवा इतनी चिंतित क्यों थी?
2. सहायता के लिए वह कहाँ गई?
3. भविष्यद्वक्ता ने उससे क्या कहा?
4. बंद दरवाज़े के पीछे यह आश्चर्यकर्म हुआ। यह क्या दर्शाता है?

❊ ❊ ❊

पाठ-23

धधकता हुआ भट्ठा

(दानिय्येल 3:1-30)

मुख्य बिंदु :

1. परमेश्वर की संतानों को शैतान की धमकियों से डरने की आवश्यकता नहीं है।
2. हमें मनुष्यों से अधिक, परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना चाहिए।
3. परमेश्वर उन लोगों के साथ रहते हैं, जो कष्ट उठाते हैं।

पाठ :

नबूकदनेस्सर, बाबुल का एक महान राजा था। इस्राएली लोगों ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं किया, इस कारण परमेश्वर ने उनसे युद्ध करने के लिए नबूकदनेस्सर को भेजा, जिसने बहुत लोगों को मार डाला, और युद्ध में विजयी हो गया। बचे हुओं को बन्दी बनाकर वह बाबुल ले गया। बाबुल वासी मूर्तिपूजक थे।

उन गुलामों में यहूदा के कुछ युवक थे, जिन्होंने निर्णय लिया, कि वे केवल जीवते परमेश्वर की ही आराधना करेंगे। ये युवक अत्यंत बुद्धिमान, सुंदर और स्वस्थ थे। अंततः नबूकदनेस्सर ने उन्हें अपने राज्य में अफसर बना दिया।

कुछ समय के पश्चात् राजा नबूकदनेस्सर ने सोने की एक विशाल मूरत बनवाई, और उसे बाबुल प्रान्त के दूरा नामक मैदान में खड़ा कराया। तब राजा ने ढिंढ़ोरा पिटवाया, कि जिस समय तुम सब प्रकार के बाजों का शब्द सुनो, तुम उसी समय गिरकर राजा की खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत् करो। और जो कोई गिरकर दण्डवत् न करेगा, वह उसी समय धधकते हुए भट्ठे के बीच में डाल दिया जाएगा।

तीन यहूदी युवक जो मात्र जीवित परमेश्वर की आराधना करते थे, उनको शद्रक, मेशक और अबेदनगो नाम दिए गए। उन्होंने राजा की

आज्ञा सुनी, परन्तु उसकी कुछ परवाह नहीं की। उन्हें राजा के सम्मुख लाया गया। तब नबूकदनेस्सर ने क्रोध से भरकर उनसे पूछा, हे शद्रक, मेशक और अबेदनगो, क्या तुम लोग जानबूझकर मेरी आज्ञा टालते हो? मैं तुम्हें एक अवसर और देता हूँ। यदि तुम मूरत को दण्डवत् नहीं करोगे, तो आग के भट्ठे में डाल दिए जाओगे। फिर ऐसा कौन सा देवता है, जो तुम्हें मेरे हाथ से छुड़ा सकेगा?

उन युवकों ने राजा को उत्तर दिया, ''हे नबूकदनेस्सर, इस विषय में तुझे उत्तर देने की हमें कोई आवश्यकता नहीं है। हमारा परमेश्वर, जिसकी हम उपासना करते हैं, वह हमको उस धधकते हुए भट्ठे की आग से बचाने की शक्ति रखता है। वरन हे राजा, हमें तेरे हाथ से भी छुड़ा सकता है। परन्तु, यदि नहीं, तो हे राजा, तुझे मालूम हो, कि हम लोग तेरे देवता की उपासना नहीं करेंगे, और न तेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत् करेंगे।''

तब नबूकदनेस्सर ने आज्ञा दी कि भट्ठे को सात गुना अधिक धधका दो। फिर अपनी सेना के कई बलवान पुरुषों को उसने आज्ञा दी, ''शद्रक, मेशक और अबेदनगो को बाँधकर उन्हें धधकते हुए भट्ठे में डाल दो।''

तब वे पुरुष भट्ठे में डाल दिए गए। वह भट्ठा राजा की दृढ़ आज्ञा होने के कारण अत्यंत धधकाया गया था, इस कारण जिन पुरुषों ने शद्रक, मेशक और अबेदनगो को आग में डाला, वे स्वयं ही आग की आंच से जलकर मर गए।

तभी एक अजीब बात हुई। नबूकदनेस्सर अचंभे से भरकर उठ खड़ा हुआ। और घबराकर कहने लगा, ''क्या हमने उस आग के बीच तीन ही पुरुष बन्धे हुए नहीं डलवाए? अब मुझे चार पुरुष दिखाई दे रहे हैं, जो खुले हुए हैं और टहल रहे हैं। और चौथे पुरुष का स्वरूप ईश्वर के पुत्र के सदृश्य है।'' फिर नबूकदनेस्सर उस धधकते हुए भट्ठे के द्वार के पास जाकर कहने लगा, ''हे शद्रक, मेशक और अबेदनगो, हे परमप्रधान परमेश्वर के दासों, निकलकर यहाँ आओ!'' यह सुनकर वे तीनों आग

के बीच से निकल आए। जब अधिपति, हाकिम, गवर्नर और राजा के मंत्रियों ने, जो इकट्ठे हुए थे, उन पुरुषों की ओर देखा, तब उनकी देह में आग का कुछ भी प्रभाव नहीं पाया। उनके सिर का एक बाल भी न झुलसा और न ही उनके कपड़े जले।

तब नबूकदनेस्सर ने कहा, ''धन्य है शद्रक, मेशक और अबेदनगो का परमेश्वर। इन्होंने अपना शरीर भी अर्पण किया, कि हम अपने परमेश्वर को छोड़ और किसी देवता की उपासना या दण्डवत् नहीं करेंगे। इसलिए अब कोई भी व्यक्ति उनके परमेश्वर की निन्दा नहीं करेगा, क्योंकि ऐसा कोई और देवता नहीं, जो अपने लोगों को इस प्रकार बचा सके।''

तब राजा ने इन युवकों को अपने राज्य में ऊँचा पद देकर उनका सम्मान किया।

हमारे जीवन में ऐसे अवसर आ सकते हैं, जब परमेश्वर की आज्ञा मानना असंभव प्रतीत होता है। तथापि, परमेश्वर हमें उसमें से निकालेंगे, यदि हम पूर्ण रूप से परमेश्वर पर विश्वास रखेंगे। अत्यंत कठिन समस्याओं में भी परमेश्वर हमारे साथ रहकर हमारी सुरक्षा करेंगे, और हमें शांति देकर आशीषित करेंगे।

याद करें :

यशायाह 43:2 जब तू आग में चले, तब तुझे आँच न लगेगी, और उसकी लौ तुझे न जला सकेगी।

प्रश्न :

1. परमेश्वर ने अपने लोगों को नबूकदनेस्सर की गुलामी में क्यों जाने दिया?
2. राजा ने सोने की मूर्ति की स्थापना कहाँ पर की? और उसने लोगों को क्या आज्ञा दी?
3. किन तीन युवकों ने राजा की आज्ञा का पालन करने से इन्कार

किया?

4. उन्होंने राजा से क्या कहा?
5. उन बलवान पुरुषों के साथ क्या हुआ, जिन्होंने इन तीन युवकों को धधकते हुए भट्ठे में डाला?
6. धधकते हुए भट्ठे के भीतर कौन सा आश्चर्यकर्म हुआ?

❊ ❊ ❊

पाठ–24

दानिय्येल–सिंहों की मांद में

(दानिय्येल 6)

मुख्य बिंदु :

1. परमेश्वर के लोगों को इस बात से भयभीत नहीं होना चाहिए, कि मनुष्य उनके साथ क्या कर सकते हैं।
2. परमेश्वर अपने विश्वास करने वालों की सुरक्षा करते हैं।
3. परमेश्वर के लोगों को, हानि पहुँचाने के लिए की गई, दुष्टों की युक्ति उनके ही सिर पर पड़ेगी।

पाठ :

पिछले पाठ में हमने उन तीन नवयुवकों के बारे में सीखा, जिन्होंने मूर्ति के सामने दण्डवत् करने से इन्कार कर दिया और परमेश्वर ने उनके छुटकारे के लिए आश्चर्यकर्म किया।

इन तीनों का एक मित्र था, जिसका नाम दानिय्येल था। वह भी एक यहूदी बंधुआ था जो जीवते परमेश्वर से प्रेम करता था। दानिय्येल को भी अन्य तीनों नवयुवकों के साथ, बाबुल के तौर-तरीकों की शिक्षा दी गई थी। वह परमेश्वर का जन था, और उसमें स्वप्नों का अर्थ बताने की सामर्थ्य थी। वह राज्य में एक ऊँचे पद पर नियुक्त था।

नबूकदनेस्सर और उसके पुत्रों के राज्य के पश्चात् बाबुल पर राजा दारा राज्य करने लगा। उसने अपने राज्य के अधिपतियों के ऊपर तीन अध्यक्ष ठहराए, जिनमें से एक दानिय्येल था। जब यह देखा गया, कि दानिय्येल में उत्तम आत्मा रहती है, तब उसे सबसे अधिक प्रतिष्ठा मिली और वह राजा की दृष्टि में सर्वोत्तम ठहरा। इस कारण, अन्य अध्यक्ष और अधिपति उससे जलन रखने लगे, और उसे मरवा डालने की योजना बनाने लगे। वे उसके विरुद्ध दोष ढूँढ़ने लगे, परन्तु न पा सके। क्योंकि वह विश्वासयोग्य था।

अंततः वे कहने लगे कि हम उस दानिय्येल के परमेश्वर की व्यवस्था के अलावा और किसी भी विषय में, उसके विरुद्ध कोई दोष न पा सकेंगे। तब वे मिलकर राजा के पास आए और कहा, ''हे राजा दारा, तू युग युग जीवित रहे। अब हे राजा, ऐसी आज्ञा दे, और इस पत्र पर हस्ताक्षर कर कि अब से तीस दिन तक जो कोई, तुझे छोड़ किसी और मनुष्य या देवता से विनती करे, वह सिंहों की माँद में डाल दिया जाए।'' ये अफसर जानते थे कि दानिय्येल दिन में तीन बार जीवते परमेश्वर से प्रार्थना किया करता है, परन्तु राजा को उनकी यह योजना मालूम न थी, इसलिए उसने उस पत्र पर हस्ताक्षर कर दिया, जो अब बदला नहीं जा सकता था।

जब दानिय्येल को मालूम हुआ कि उस पत्र पर हस्ताक्षर किया गया है, तब वह अपने घर में गया, जिसकी उपरौठी कोठरी की खिड़कियाँ यरूशलेम के सामने खुली रहती थीं, और अपनी रीति के अनुसार, जैसा वह दिन में तीन बार अपने परमेश्वर के सामने घुटने टेककर प्रार्थना और धन्यवाद करता था, वैसा ही तब भी करता रहा।

उन पुरुषों ने दानिय्येल की शिकायत राजा से की और उसे सिंहों की माँद में डाल देने की आज्ञा माँगी।

राजा बहुत उदास हुआ, क्योंकि वह दानिय्येल को बचाना चाहता था। तथापि, वह उस आज्ञा को बदल नहीं सकता था। इस कारण, दानिय्येल को सिंहों की माँद में डाल दिया गया। राजा ने दानिय्येल से कहा, ''तेरा परमेश्वर, जिसकी तू नित्य उपासना करता है, वही तुझे बचाए!'' तब एक पत्थर लाकर उस गड़हे के मुँह पर रखा गया और उस पर राजा ने अपनी अंगूठी से, और अपने प्रधानों की अंगूठियों से मुहर लगा दी।

उस रात, राजा ने न भोजन किया और न ही उसे नींद आई। भोर को पौ फटते ही राजा उठा और सिंहों के गड़हे की ओर फुर्ती से चला गया। गड़हे के निकट आकर राजा ने शोकभरी वाणी से पुकारा, ''हे दानिय्येल, हे जीवते परमेश्वर के दास, क्या तेरा परमेश्वर, जिसकी तू नित्य उपासना करता है, तुझे सिंहों से बचा सका है?'' तब दानिय्येल ने

राजा से कहा, ''हे राजा, मेरे परमेश्वर ने अपना दूत भेजकर सिंहों के मुँह को ऐसा बन्द कर रखा, कि उन्होंने मेरी कुछ भी हानि नहीं की। इसका कारण यह है, कि मैं उसके सामने निर्दोष पाया गया, और हे राजा, तेरे सम्मुख भी मैंने कोई गलती नहीं की।'' तब राजा ने बहुत आनंदित होकर दानिय्येल को गड़हे में से निकालने की आज्ञा दी। उस पर हानि का कोई चिह्न न पाया गया, क्योंकि वह अपने परमेश्वर पर विश्वास रखता था।

तब राजा ने आज्ञा दी, कि जिन पुरुषों ने दानिय्येल की चुगली खाई थी, वे सिंहों की मांद में डाल दिए जाएँ। और वे गड़हे की पेंदी तक भी न पहुँचे कि सिंहों ने उन पर झपटकर उनको चबा डाला।

तब दारा राजा ने घोषणा करवाई, कि उसके राज्य के लोग दानिय्येल के परमेश्वर की उपासना करेंगे, क्योंकि जीवता और युगानुयुग रहने वाला परमेश्वर वही है। वही अपने लोगों को बचाने वाला और छुड़ानेवाला परमेश्वर है।

याद करें :

भजन संहिता 56:11 मैंने परमेश्वर पर भरोसा रखा है, मैं नहीं डरूँगा, मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?

प्रश्न :

1. अन्य अधिकारी दानिय्येल से क्यों जलते थे?
2. राजाज्ञा के बारे में जानने पर दानिय्येल ने क्या किया?
3. दानिय्येल को शेरों की मांद में डालने के पश्चात् राजा को कैसा महसूस हुआ? सुबह उसने क्या किया?
4. अन्त में उन अफसरों के साथ क्या हुआ?

❊ ❊ ❊

पाठ–25

योना भविष्यद्वक्ता

(योना 1–4)

मुख्य बिंदु :

1. परमेश्वर की आज्ञा का पालन न करना, पाप है। पाप से मृत्यु आती है।
2. यदि हम से पाप हो जाए, तो हमें सच्चे मन से पश्चाताप करके अपने पापों को मान लेना चाहिए और परमेश्वर की ओर फिर जाना चाहिए।
3. परमेश्वर चाहते हैं कि सभी मनुष्य मन फिराएँ और बचाए जाएँ।

पाठ :

आज हम उस भविष्यद्वक्ता के विषय में सीखेंगे जिसने परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानी और भाग गया। और फिर उसका क्या परिणाम हुआ।

यह उस समय की बात है, जब अश्शूरी लोग बहुत शक्तिशाली थे। उनकी राजधानी थी–नीनवे। वह एक महान शहर था। उस शहर के लोग बहुत दुष्ट थे, और परमेश्वर ने उन्हें नाश करने का निर्णय किया। इसलिए परमेश्वर ने योना भविष्यद्वक्ता से कहा, कि नीनवे को जा और उसके विरुद्ध प्रचार कर।

योना नीनवे के लोगों के पास जाना नहीं चाहता था। इस कारण वह परमेश्वर की उपस्थिति से भाग जाना चाहता था। वह यापो नगर को गया और तर्शीश जाने वाले एक जहाज़ पर भाड़ा देकर चढ़ गया। उसने सोचा कि इस प्रकार वह परमेश्वर की उपस्थिति से भाग सकेगा। तथापि, परमेश्वर उसकी गतिविधियों को देख रहे थे। तब परमेश्वर ने समुद्र में एक प्रचण्ड आंधी चलाई। आंधी इतनी बड़ी थी कि जहाज़ टूटने पर था। मल्लाह लोग अत्यंत भयभीत हो गए। सब अपने–अपने देवता की दोहाई देने लगे। और जहाज़ में व्यापार की जो सामग्री थी, उसे समुद्र में फेंकने

लगे कि जहाज़ हल्का हो जाए। परन्तु योना जहाज़ के निचले भाग में उतरकर सो गया था। और गहरी नींद में पड़ा हुआ था। तब मांझी उसके निकट आकर कहने लगा, ''तू ऐसे क्यों सो रहा है? उठकर अपने देवता की दोहाई दे! संभव है कि परमेश्वर हमारी चिन्ता करे और हम नाश न हों।''

यदि योना परमेश्वर की संगति में होता, तो इस कठिन समय में परमेश्वर से प्रार्थना करता। परन्तु वह परमेश्वर की आज्ञा न मानकर भाग रहा था, इस कारण, वह सहायता के लिए परमेश्वर से प्रार्थना नहीं कर सका। जब हमारे हृदय में पाप रहता है, तब परमेश्वर हमारी प्रार्थना नहीं सुनेंगे। (भजन 66:18)।

जब आंधी बढ़ती गई, तब उन्होंने चिट्ठी डाली, कि पता करें कि यह विपत्ति किसके कारण आई है। चिट्ठी योना के नाम पर निकली। उन्होंने उससे पूछा, ''तू कौन है, और कहाँ से आया है?'' योना ने उन्हें उत्तर दिया, ''मैं इब्री हूँ, और स्वर्ग का परमेश्वर यहोवा, जिसने जल, स्थल दोनों को बनाया है, उसी का भय मानता हूँ।'' तब वे बहुत डर गए और उससे कहने लगे, ''तू ने यह क्या किया है? हम तेरे साथ क्या करें, जिससे समुद्र शान्त हो जाए?'' योना ने उनसे कहा, ''मुझे उठाकर समुद्र में फेंक दो, तब समुद्र शांत पड़ जाएगा, क्योंकि मैं जानता हूँ कि यह भारी आंधी मेरे ही कारण आई है।''

तौभी वे बड़े यत्न से नाव खेते रहे, कि किनारे पर पहुँच जाएँ, परन्तु पहुँच न सके क्योंकि समुद्र की लहरें उनके विरुद्ध बढ़ती ही जाती थीं। अंततः उन्होंने योना को उठाकर समुद्र में फेंक दिया, और समुद्र की भयानक लहरें थम गईं।

परमेश्वर ने एक बड़ा सा मच्छ ठहराया था कि योना को निगल ले। और योना उस मच्छ के पेट में तीन दिन और तीन रात पड़ा रहा। उसके पेट में पड़े-पड़े योना ने परमेश्वर से प्रार्थना की। उसने पश्चाताप किया और परमेश्वर की ओर फिर गया। परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना सुनी और मच्छ को आज्ञा दी, और उसने योना को स्थल पर उगल दिया।

परमेश्वर ने फिर से योना से कहा, ''उठकर उस बड़े नगर नीनवे को जा, और जो बात मैं तुझ से कहूँगा, उसका उस नगर में प्रचार कर। उनसे कह, कि अब से चालीस दिन के बीतने पर नीनवे नाश किया जाएगा।'' इस बार योना ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया। जब नीनवे के मनुष्यों ने और राजा ने योना के वचन सुने तब उन्होंने उसके संदेश पर विश्वास किया। उन्होंने उपवास और प्रार्थना की और अपने कुमार्गों से फिर गए। जब परमेश्वर ने देखा, कि नीनवे के मनुष्यों ने पश्चाताप किया है, तब परमेश्वर ने उन पर दया की और उन्हें नाश नहीं किया।

यह बात योना को बहुत बुरी लगी कि परमेश्वर ने नीनवे को नाश नहीं किया। वह चाहता था कि परमेश्वर नीनवे के मनुष्यों को नाश कर दें। तथापि, परमेश्वर दयालु और क्षमा करने वाले परमेश्वर हैं। वह हमारे समस्त पापों को क्षमा करने के लिए तैयार हैं। हमें भी दूसरों को क्षमा करना चाहिए।

याद करें :

योना 2:9 उद्धार यहोवा ही से होता है।

प्रश्न :

1. परमेश्वर ने योना को क्या आज्ञा दी थी?
2. योना ने क्या किया?
3. योना को समुद्र में क्यों फेंका गया?
4. योना का संदेश सुनकर नीनवे के मनुष्यों ने क्या किया?

❊ ❊ ❊

पाठ-26

प्रभु यीशु का जन्म

(लूका 1:26-38)

मुख्य बिंदु :

1. परमेश्वर उस व्यक्ति को चुनते हैं, जिसे परमेश्वर अपने कार्य में लगाना चाहते हैं।
2. परमेश्वर का पुत्र, प्रभु यीशु एक शिशु के रूप में उत्पन्न हुए, ताकि हमारा उद्धारकर्ता बन सकें।

पाठ :

परमेश्वर स्वर्ग में रहते हैं, और हम उन्हें देख नहीं सकते। अतः परमेश्वर ने अपने पुत्र को एक शिशु के रूप में इस संसार में भेजा।

बहुत समय पहले, परमेश्वर ने इब्राहीम से वायदा किया था, कि उसके परिवार के द्वारा संसार के सभी परिवार आशीषित होंगे। सदियों के पश्चात् परमेश्वर ने इब्राहीम के वंशज दाऊद से वायदा किया कि उसके पुत्रों में से एक सदाकाल का राजा होगा। परमेश्वर ने अपने एक भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहलवाया, कि ''एक बालक'' जो ''पराक्रमी परमेश्वर'' है (यशायाह 9:6) वह बेतलेहेम में उत्पन्न होगा। (मीका 5:2)। इस आने वाले राजा के विषय में अनेक भविष्यद्वाणियाँ हुईं, और यहूदी लोग उसका बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे। भविष्यद्वक्ताओं ने उस राजा को ''अभिषिक्त'' और ''मसीहा'' भी कहा है।

सही समय के आने पर, परमेश्वर ने नासरत नगर की मरियम नाम की एक कुंवारी कन्या को चुना, कि वह ''मसीहा'' की माँ बने। मरियम की सगाई यूसुफ नाम के एक बढ़ई के साथ हो चुकी थी। अतः परमेश्वर ने अपने स्वर्गदूत जिब्राईल को भेजा कि उन्हें परमेश्वर की योजना समझा दे।

जिब्राईल ने मरियम के पास आकर उसे बताया कि परमेश्वर का

अनुग्रह उस पर हुआ है। और वह उद्धारकर्ता-मसीहा की माता होने के लिए चुनी गई है। मरियम ने उत्तर दिया, ''मुझे तेरे वचन के अनुसार हो।'' तब स्वर्गदूत उसके पास से चला गया।

तत्पश्चात्, जिब्राईल ने यूसुफ के पास आकर उसे बताया, कि मरियम का पहला शिशु उद्धारकर्ता-मसीहा होगा, जिसका वायदा किया गया था। यूसुफ और मरियम, दोनों ही दाऊद के वंशज थे। जिब्राईल ने यूसुफ से कहा कि तू बालक का नाम ''यीशु'' रखना, जिसका अर्थ है उद्धारकर्ता।

याद करें :

मत्ती 1:21 तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।

प्रश्न :

1. प्रभु यीशु के जन्म से पहले कौन से वायदे दिए गए थे?
2. मरियम के सामने कौन प्रकट हुआ? उसने मरियम से क्या कहा?
3. मरियम ने जिब्राईल को क्या उत्तर दिया?
4. उद्धारकर्ता के जन्म स्थान के विषय में भविष्यद्वक्ता ने क्या कहा था?
5. जिब्राईल ने यूसुफ से क्या कहा?

❊ ❊ ❊

पाठ–27

बालक यीशु और चरवाहे

(लूका 2:1–20)

मुख्य बिंदु :

1. उद्धारकर्ता का जन्म हुआ। और उसे चरनी में रखा गया।
2. परमेश्वर का पुत्र स्वर्ग में सबसे ऊँचे स्थान पर से, संसार के सबसे निचले स्थान पर आया।

पाठ :

बच्चों, आज हम प्रभु यीशु मसीह के जन्म के विषय में सीखेंगे। रोमी सम्राट औगूस्तुस की ओर से आज्ञा निकली, कि समस्त रोमी राज्य की जनगणना की जाए। इस कार्य के लिए हर एक को अपने–अपने शहर जाना था। यूसुफ और मरियम नासरत शहर में रहते थे, परन्तु वे बैतलहम नगर के थे और दाऊद के वंशज थे। अत: वे भी अन्य लोगों के साथ बैतलहम को गए। जब तक वे वहाँ पहुँचे, तब तक सराय भर चुके थे, और उन्हें रहने के लिए जगह न मिली। अंतत: उन्होंने वहाँ शरण ली जहाँ पशुओं को बांधा जाता है। वहाँ प्रभु यीशु का जन्म हुआ, और उन्होंने उसे कपड़े में लपेटकर चरनी में रखा।

उस रात बैतलहम के पास कुछ चरवाहे मैदान में अपने झुण्ड का पहरा दे रहे थे। अचानक उनके चारों ओर रोशनी चमकी, और प्रभु के एक दूत ने प्रकट होकर उनसे कहा, ''मत डरो! मैं तुम्हें बड़े आनंद का सुसमाचार सुनाता हूँ, जो सब लोगों के लिए होगा, कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्ता जन्मा है, और वही मसीह प्रभु है।'' तब एकाएक उस स्वर्गदूत के साथ स्वर्गदूतों का दल परमेश्वर की स्तुति करते और यह कहते दिखाई दिया, ''आकाश में परमेश्वर की महिमा, और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में, जिनसे वह प्रसन्न है, शान्ति हो।''

चरवाहे आश्चर्यचकित हो गए। उन्होंने उसी रात को, शीघ्रता से

बैतलहम जाकर बालक यीशु को कपड़े में लिपटा और चरनी में पड़ा देखा, जैसे स्वर्गदूत ने उनसे कहा था। उन्होंने ये बातें और लोगों को भी बताईं, जिसको सुनकर सबने आश्चर्य किया। परन्तु मरियम ये सब बातें अपने मन में रखकर सोचती रही।

चरवाहे परमेश्वर की स्तुति करते हुए लौट गए। हमें भी परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए, क्योंकि उन्होंने हमारे लिए अपने पुत्र को इस संसार में भेजा।

याद करें :

लूका 2:14 आकाश में परमेश्वर की महिमा, और पृथ्वी पर मनुष्यों में शांति हो।

प्रश्न :

1. यूसुफ और मरियम बैतलहम क्यों गए?
2. ''यीशु'' का क्या अर्थ है?
3. प्रभु यीशु के जन्म के बारे में सबसे पहले किन लोगों ने सुना? किसने उन्हें बताया?
4. परमेश्वर के पुत्र ने इस संसार में क्यों जन्म लिया?

❊ ❊ ❊

पाठ-28

बालक यीशु और ज्योतिषी

(मत्ती 2:1-12)

मुख्य बिंदु :

1. परमेश्‍वर हमारा सही मार्गदर्शन करेंगे।
2. हमें अपना सर्वोत्तम, प्रभु को देना चाहिए।

पाठ :

पूर्व दिशा के कुछ ज्योतिषियों ने आकाश में एक विशेष तारा देखा। वे समझ गए थे कि यह तारा किसी राजा के जन्म का चिह्न है। वे इतने उत्तेजित हो गए कि उन्होंने उस शिशु को ढूँढ़ने का निर्णय लिया। उन्होंने अपने साथ बहुमूल्य वस्तुएँ लीं ताकि बालक राजा को भेंट दे सकें। और पश्‍चिम दिशा की ओर चल पड़े। वे यरूशलेम पहुँचे और हेरोदेस के राजभवन में यह सोचकर पहुँचे कि राजा का जन्म राजमहल में हुआ होगा। उनकी बात सुनकर हेरोदेस घबरा गया। उसने महायाजकों और शास्त्रियों को इकट्‌ठे करके उनसे पूछा, ''मसीह का जन्म कहाँ होना चाहिए?'' उन्होंने उससे कहा, ''यहूदिया के बैतलहम में। क्योंकि मीका भविष्यद्वक्ता ने पहले से ही इसकी भविष्यद्वाणी की है।'' (मीका 5:2)।

फिर हेरोदेस के मन में उस बालक से छुटकारा पाने का विचार आया। अत: उसने उन ज्योतिषियों को चुपके से बुलाकर उनसे पूछा कि तारा ठीक किस समय दिखाई दिया था। और उसने उन्हें आज्ञा दी ''बैतलहम को जाकर उस बालक के विषय में ठीक-ठीक मालूम करो, और जब वह मिल जाए, तो मुझे समाचार दो, ताकि मैं भी आकर उसको प्रणाम करूँ।''

वे राजा की बात सुनकर चले गए, और वह तारा उनके आगे-आगे चला। वे उस तारे को देखकर अति आनंदित हुए। और वह तारा उस जगह के ऊपर पहुँचकर ठहर गया जहाँ बालक राजा था।

उन्होंने उस घर में पहुँचकर बालक को माता मरियम के साथ देखा, और मुँह के बल गिरकर उसे दण्डवत् किया। और अपना-अपना थैला खोलकर उसको सोना और लोहबान और गन्धरस की भेंट चढ़ाई। उनकी तरह, हमें भी अपना सर्वोत्तम प्रभु को देना चाहिए।

परमेश्वर ने ज्योतिषियों को स्वप्न में चेतावनी दी, कि हेरोदेस के पास फिर मत जाना। अत: वे दूसरे मार्ग से होकर अपने देश को चले गए।

याद करें :

भजन संहिता 89:18 इस्राएल का पवित्र हमारा राजा है।

प्रश्न :

1. ज्योतिषियों ने कैसे जाना कि एक राजा का जन्म हुआ है?
2. सबसे पहले, किस स्थान पर उन्होंने बालक राजा को ढूँढ़ा?
3. हेरोदेस ने ज्योतिषियों से क्या करने को कहा? उसका उद्देश्य क्या था?
4. ज्योतिषियों ने बालक यीशु को भेंट में क्या-क्या दिए?

❊ ❊ ❊

पाठ–29

बालक यीशु–मंदिर में

(लूका 2:41-51)

मुख्य बिंदु :

1. बचपन में ही प्रभु यीशु परमेश्वर का कार्य करना चाहते थे।
2. हमें प्रभु यीशु मसीह के साथ निरंतर संगति में रहना चाहिए।
3. हमें अपने माता–पिता के आधीन रहना चाहिए।

पाठ :

ज्योतिषियों का अपने देश को लौट जाने के पश्चात् परमेश्वर के एक दूत ने यूसुफ को दर्शन देकर कहा, ''बालक और उसकी माता को लेकर मिस्र देश को भाग जा, क्योंकि हेरोदेस इस बालक को मार डालना चाहता है।'' यूसुफ ने आज्ञा का पालन किया, और हेरोदेस की मृत्यु होने तक वे मिस्र में रहे। फिर स्वर्गदूत ने यूसुफ से कहा, ''उठ, बालक और उसकी माता को लेकर इस्राएल के देश में चला जा।'' इस्राएल के देश में आकर जब उसने सुना कि अरखिलाउस अपने पिता हेरोदस की जगह, यहूदिया पर राज्य कर रहा है, तब वह डर गया। तब परमेश्वर ने उससे कहा कि वह गलील के नासरत नाम नगर में जाकर बस जाए।

नासरत में, प्रभु यीशु एक आज्ञाकारी बालक होकर रहे, और सब उससे प्रसन्न थे। यहूदी लोग प्रति वर्ष, फसह के पर्व में यरूशलेम को जाते थे। जब प्रभु यीशु बारह वर्ष के हुए तब वे अपने माता–पिता के और अपने कुटुम्बियों के साथ पर्व की रीति के अनुसार यरूशलेम को गए। उन दिनों को पूरा करके सब लौटने लगे, परन्तु बालक यीशु यरूशलेम में रह गया। यह बात उसके माता–पिता नहीं जानते थे। उन्होंने सोचा कि बालक यीशु और यात्रियों के साथ होगा। एक दिन की यात्रा तय करने के पश्चात् जब उन्होंने उसे अपने कुटुम्बियों और जान–पहचानों

में ढूँढ़ा, और वह नहीं मिला, तो वे उसे ढूँढ़ते हुए यरूशलेम पहुँच गए। तीन दिन के पश्चात् उन्होंने उसे मन्दिर में उपदेशकों के बीच में बैठे, उनकी सुनते और उनसे प्रश्न करते हुए पाया। और जितने उसकी सुन रहे थे, वे सब उसकी समझ और उसके उत्तरों से चकित थे। उसकी माता ने उससे पूछा, ''हे पुत्र, तूने हमसे ऐसा व्यवहार क्यों किया? देख, तेरा पिता और मैं परेशान होकर तुझे ढूँढ़ते थे।'' उसने उनसे कहा, ''तुम मुझे क्यों ढूँढ़ते थे? क्या नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के भवन में होना और उनके कार्य में लगे रहना आवश्यक है?'' उसके माता-पिता उसकी कही इस बात का अर्थ समझ न सके। बालक यीशु उनके साथ वापस नासरत में आया, और उनकी आधीनता में रहा। और उसकी माता मरियम ने ये सब बातें अपने मन में रखीं।

बच्चों आपको भी बालक यीशु की तरह ही, परमेश्वर की बातों पर मन लगाना चाहिए, और अपने माता-पिता की आज्ञा माननी चाहिए।

याद करें :

लूका 2:52 यीशु बुद्धि और डील-डौल में और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया।

प्रश्न :

1. हेरोदेस से बचाने के लिए यूसुफ, मरियम और बालक यीशु को कहाँ ले गया?
2. यहूदी लोग किस अवसर पर यरूशलेम को जाते थे?
3. बालक यीशु कितने वर्ष का था जब वह अपने माता-पिता के साथ पर्व में गया? और वापसी में क्या हुआ?
4. उन्हें बालक यीशु कहाँ मिला? वह क्या कर रहा था?
5. यरूशलेम से लौटकर बालक यीशु नासरत में अपने घर में कैसे रहा?

❊ ❊ ❊

पाठ-30

काना में विवाह

(यूहन्ना 2:1-11)

मुख्य बिंदु :

1. यह आवश्यक है कि प्रभु यीशु मसीह हर समय हमारे साथ रहें।
2. हमें अपनी प्रत्येक समस्या के बारे में प्रभु को बताना चाहिए।
3. हमें प्रभु यीशु की आज्ञानुसार कार्य करना चाहिए।

पाठ :

बच्चों, आज हम उस आश्चर्यकर्म के विषय में सीखेंगे, जो प्रभु यीशु ने सबसे पहले किया।

प्रभु यीशु ने तीस वर्ष की उम्र में अपना सेवा कार्य आरंभ किया। उनके बारह शिष्य थे। प्रभु यीशु, उनकी माता और उनके शिष्यों को काना नामक स्थान पर विवाह में आमंत्रित किया गया था। आप जानते हैं कि विवाह समारोह में भोज भी होता है। उस देश में दाखरस मुख्य पेय पदार्थ होता था। भोज के दौरान वहाँ दाखरस खत्म हो गया। यह देखकर, मरियम ने प्रभु यीशु के पास जाकर कहा, ''उनके पास दाखरस नहीं रहा।'' प्रभु यीशु ने अजीब उत्तर दिया, ''हे महिला, मुझे तुझसे क्या काम? अभी मेरा समय नहीं आया।'' तथापि, मरियम निराश नहीं हुई। उसने सेवकों से कहा, ''जो कुछ वह तुमसे कहे, वही करना।''

वहाँ उनके पास पत्थर के बड़े-बड़े मटके रखे थे। प्रभु यीशु ने उनसे कहा कि मटकों में पानी भर दो। सो उन्होंने उसकी आज्ञा मानकर उन मटकों को मुंहामुंह भर दिया। तब प्रभु यीशु ने उनसे कहा, ''अब निकालकर भोज के प्रधान के पास ले जाओ।'' जब भोज के प्रधान ने वह पानी चखा, तब उसने कहा, ''हर एक मनुष्य पहले अच्छा दाखरस देता है, परन्तु तुमने अच्छा दाखरस अब तक बचाकर रखा है।'' वह नहीं जानता था कि वह दाखरस कहाँ से आया, परन्तु जिन सेवकों ने

पानी निकाला था, वे जानते थे।

प्रभु यीशु ने यह आश्चर्यकर्म किया, ताकि लोग जान सकें कि वह परमेश्वर का पुत्र है।

याद करें :

भजन संहिता 118:8 यहोवा की शरण लेनी, मनुष्य पर भरोसा रखने से उत्तम है।

प्रश्न :

1. विवाह किस स्थान पर था? भोज में क्या समस्या उत्पन्न हुई?
2. मरियम ने प्रभु यीशु से क्या कहा?
3. समस्या आने पर हमें क्या करना चाहिए?
4. प्रभु यीशु ने सेवकों को क्या आज्ञा दी?
5. भोज के प्रधान ने क्या कहा?
6. प्रभु यीशु ने यह आश्चर्यकर्म क्यों किया?

❊ ❊ ❊

पाठ–31

टूटी छत

(मरकुस 2:1–13)

मुख्य बिंदु :

- प्रभु यीशु मसीह पापों को क्षमा करने और रोगों को चंगा करने की सामर्थ्य रखते हैं।

पाठ :

प्रभु यीशु मसीह गलील के अनेक गाँवों में गए, जहाँ उन्होंने लोगों को शिक्षा दी और रोगियों को स्वस्थ किया। उन्होंने कफरनहूम में एक कोढ़ी को रोगमुक्त किया। कुछ दिनों के पश्चात् फिर से प्रभु वहाँ गए। जिस घर में प्रभु थे, वह लोगों से इतना भर गया था कि लोग द्वार पर और बाहर तक खड़े होकर उनकी बातें सुन रहे थे। तब कुछ लोग एक लकवाग्रस्त व्यक्ति को चार मनुष्यों से उठवाकर उसके पास लेकर आए। परन्तु भीड़ के कारण उसके पास तक पहुँच न सके। अतः उन्होंने उस घर की छत को खोल दिया और वहाँ से उस खाट को जिस पर वह रोगी पड़ा था, नीचे लटका दिया। प्रभु यीशु ने उन लोगों के गहरे विश्वास को देखकर उस रोगी से कहा, ''हे पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए।''

कुछ यहूदी लोग प्रभु के इन वचनों से खुश नहीं थे। क्योंकि वे लोग यीशु को प्रभु नहीं मानते थे, इसलिए अपने मन में सोचने लगे कि परमेश्वर को छोड़ और कौन पाप क्षमा कर सकता है। प्रभु यीशु ने उनके मन के विचारों को जान लिया, और उनसे पूछा, ''क्या कहना आसान है? क्या लकवाग्रस्त मनुष्य से यह कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए, या फिर यह कहना, कि उठ, अपनी खाट उठाकर चला जा?'' प्रभु ने फिर उनसे कहा, ''परन्तु जिससे तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है, (प्रभु ने लकवाग्रस्त रोगी से कहा), 'मैं तुझ से कहता हूँ, उठ, और अपनी खाट उठाकर अपने घर

चला जा।'' और वह तुरंत उठा और अपनी खाट उठाकर सबके सामने से निकलकर चला गया। इस पर सब लोग चकित हुए और परमेश्वर की स्तुति करके कहने लगे, ''हमने ऐसा कभी नहीं देखा!''

परमेश्वर का पुत्र प्रभु यीशु मसीह, मनुष्य जाति को बचाने के लिए, मनुष्य का पुत्र बन गए।

याद करें :

भजन संहिता 103:3 वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता, और तेरे सब रोगों को चंगा करता है।

प्रश्न :

1. लकवाग्रस्त मनुष्य को लाने वालों ने उस घर की छत क्यों खोली, जहाँ प्रभु यीशु थे?
2. यह कार्य क्या प्रकट करता है?
3. प्रभु यीशु ने उस लकवाग्रस्त मनुष्य से क्या कहा?
4. प्रभु के वचनों के बारे में यहूदी क्या सोच रहे थे?
5. प्रभु यीशु ने कैसे प्रमाणित किया, कि उन्हें पापों को क्षमा करने का अधिकार है?

❊ ❊ ❊

पाठ-32

याईर की पुत्री

(मरकुस 5:22-43)

मुख्य बिंदु :

1. प्रभु यीशु रोग और मृत्यु पर अधिकार रखते हैं।
2. परमेश्वर की आशीष प्राप्त करने के लिए, विश्वास आवश्यक है।

पाठ :

बच्चों, आज हम एक छोटी लड़की के बारे में सीखेंगे। हम उसका नाम नहीं जानते, परन्तु प्रभु ने प्यार से उसे ''तलीता'' बुलाया, जिसका अर्थ है, ''छोटी लड़की''। उसके पिता का नाम याईर था। वह आराधनालय के सरदारों में से एक था। आराधनालय वह स्थान था जहाँ यहूदी लोग आराधना करने और परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने के लिए एकत्र होते थे। वह छोटी लड़की बारह वर्ष की थी, और अपने माता-पिता की एकलौती संतान थी। एक दिन वह बहुत बीमार हो गई, और उसका पिता बहुत चिंतित हो गया। वह प्रभु यीशु के पास गया और उसके पाँवों पर गिर कर विनती की, ''मेरी छोटी बेटी मरने पर है, आकर उस पर हाथ रख, कि वह चंगी होकर जीवित रहे।'' उसे विश्वास था कि प्रभु यीशु उसकी पुत्री को रोगमुक्त कर सकते हैं। प्रभु यीशु उन लोगों के विश्वास की कद्र करते हैं, जो उनके पास आते हैं।

प्रभु यीशु याईर के साथ गए, और बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली। जब वे रास्ते में ही थे, तब याईर के घर से कुछ लोगों ने आकर कहा, ''तेरी बेटी तो मर गई। अब गुरु को क्यों दुख देता है?'' यह सुनकर प्रभु ने याईर से कहा, ''मत डर, केवल विश्वास रख।'' जब वे याईर के घर पहुँचे, तो उन्होंने लोगों को बहुत रोते और चिल्लाते देखा। प्रभु ने कहा, ''तुम क्यों रोते हो? लड़की मरी नहीं, परन्तु सो रही है।'' लोग उसकी हँसी करने लगे, क्योंकि वे जानते थे कि वह मर गई है। प्रभु ने

सब को कमरे से बाहर निकाला और लड़की के माता-पिता और अपने तीन चेलों को लेकर उस लड़की के पास गए। और उस लड़की का हाथ पकड़कर उससे कहा, ''तलीता कूमी'' (जिसका अर्थ है, 'हे लड़की, मैं तुझ से कहता हूँ उठ!')। और वह लड़की तुरंत उठकर चलने फिरने लगी। यह देखकर लोग बहुत चकित हुए। प्रभु ने कहा कि उस लड़की को खाने के लिए कुछ दो।

यह आश्चर्यकर्म इस बात की गवाही देता है, कि प्रभु यीशु मसीह रोग और मृत्यु पर भी अधिकार रखते हैं।

याद करें :

इफिसियों 2:1 उसने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे।

प्रश्न :

1. याईर कौन था?
2. उसके घर में कौन बीमार था?
3. याईर प्रभु यीशु से कहाँ पर मिला?
4. याईर ने प्रभु यीशु से क्या कहा?
5. अपने घर जाते समय, रास्ते में उसे क्या संदेश मिला?
6. प्रभु यीशु ने याईर से क्या कहा?
7. उस लड़की के कमरे में कौन-कौन गया?
8. प्रभु यीशु ने उस लड़की से क्या कहा?

❊ ❊ ❊

पाठ-33

पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ

(यूहन्ना 6:5-14; मत्ती 14:13-21;
मरकुस 6:31-44; लूका 9:11-17)

मुख्य बिंदु :

1. हमारे पास जो थोड़ा है, उसे आशीषित करके, परमेश्वर हमारी आवश्यकता की पूर्ति करते हैं।
2. प्रभु यीशु हमारी शारीरिक आवश्यकताओं की भी पूर्ति करते हैं।

पाठ :

प्रभु यीशु मसीह जहाँ भी जाते थे, हज़ारों की भीड़ उनके पीछे हो लेती थी। उन्होंने प्रभु के आश्चर्यकर्मों को देखा और वे प्रभु के धन्य वचनों को सुनना चाहते थे।

एक दिन प्रभु अपने चेलों को लेकर नाव में गलील की झील के पार बैतसैदा को गए। और एक पहाड़ पर जाकर बैठ गए। जब प्रभु ने बड़ी भीड़ को देखा, तो उन पर तरस खाया। और उन्हें बहुत सी बातें सिखाईं। जब शाम होने लगी, तब चेलों ने प्रभु से कहा, ''भीड़ को विदा कर, कि आस-पास के गाँवों में जाकर अपने भोजन का उपाय करें।'' प्रभु ने कहा, ''उन्हें जाने की आवश्यकता नहीं है! तुम ही उन्हें खाने को दो।'' तब फिलिप्पुस ने कहा, ''दो सौ दीनार (एक मज़दूर की आठ महीने की मज़दूरी) की रोटी भी उनके लिए पूरी न होगी, कि उनमें से हर एक को थोड़ी-थोड़ी मिल जाए।'' प्रभु ने पूछा, ''तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?'' अंद्रियास ने कहा, ''यहाँ एक लड़का है, जिसके पास जव की पाँच रोटी और दो मछलियाँ हैं।'' प्रभु ने कहा, ''उसे मेरे पास लाओ, और लोगों को पचास-पचास करके पांति-पांति से बैठा दो।'' तब प्रभु ने वे रोटियाँ और मछलियाँ लीं और स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया, और तोड़-तोड़कर चेलों को देता गया, कि लोगों

को परोसें। स्त्रियों और बालकों के अतिरिक्त पाँच हज़ार पुरुष थे, जिन्होंने भोजन खाया और तृप्त हुए। तब प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, ''बचे हुए टुकड़े बटोर लो, कि कुछ फेंका न जाए।'' सो उन्होंने बटोरा, और जव की पाँच रोटियों के टुकड़े जो खाने वालों से बच रहे थे, उनकी बारह टोकरियाँ भरीं।

परमेश्वर ने उस पर आशीष दी, जो थोड़ा उनके पास था। हमारे पास जो कुछ भी है, चाहे वह बहुत कम हो, तौभी यदि हम उसे परमेश्वर के हाथ में सौंप दें, तो परमेश्वर उसे आशीषित करके उसे कई गुना बढ़ा कर, हमें वापस देते हैं कि हम तृप्त हों और परमेश्वर की महिमा हो।

याद करें :

भजन संहिता 136:25 वह सब प्राणियों को आहार देता है, उसकी करुणा सदा की है।

प्रश्न :

1. प्रभु यीशु के पीछे भीड़ क्यों चलती थी?
2. शाम के समय चेलों ने प्रभु से क्या कहा?
3. प्रभु ने उनसे क्या करने को कहा?
4. उस छोटे लड़के के पास कितनी रोटियाँ थीं? उसने उनका क्या किया?
5. प्रभु यीशु ने रोटियों और मछलियों का क्या किया?
6. बचे हुए टुकड़ों से कितने टोकरे भरे?

❊ ❊ ❊

पाठ-34

प्रभु यीशु और बालक

(मरकुस 10:13-16)

मुख्य बिंदु :

1. प्रभु यीशु बालकों से प्रेम करते हैं।
2. बच्चों को भी प्रभु यीशु से प्रेम करना चाहिए और प्रभु के पास आना चाहिए।
3. ''स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है।''

पाठ :

प्रभु यीशु मसीह इस संसार में आए, ताकि हमें परमेश्वर के बारे में बता सकें। परमेश्वर प्रेम हैं। इसका अर्थ है कि परमेश्वर हमसे प्रेम करते हैं।

एक दिन कुछ माताएँ अपने छोटे बच्चों को प्रभु के पास लाईं। लोग अधिकतर रोगमुक्त होने के लिए प्रभु के पास आते थे। बहुत लोग उनकी शिक्षाओं को सुनने भी आया करते थे। तथापि, यह पहला अवसर था, जब माता-पिता अपने बच्चों को प्रभु के पास लाए थे, ताकि प्रभु बच्चों को आशीष दें। यह बच्चों का सौभाग्य होगा यदि उनके माता-पिता उनके लिए प्रभु से आशीष माँगें। और चाहें कि वे भी बालक शमूएल की तरह बढ़ें। बच्चों, आपके माता-पिता प्रसन्न होते हैं जब आप संडे स्कूल जाते हैं, प्रार्थना करते हैं और परमेश्वर की स्तुति के गीत गाते हैं।

प्रभु यीशु के आसपास हमेशा भीड़ रहती थी, ताकि प्रभु के वचन सुनें और उनके आश्चर्यकर्म देख सकें। प्रभु के चेले भी उनके साथ-साथ ही रहते थे। जब चेलों ने देखा कि लोग बच्चों को प्रभु के पास ला रहे हैं, तब चेलों ने लोगों को डाँटा। क्या तुम्हें पता है कि प्रभु ने क्या कहा? प्रभु ने अपने चेलों से कहा, ''बालकों को मेरे पास आने दो, उन्हें मना मत करो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है।'' देखो

बच्चों, प्रभु बच्चों से कितना प्यार करते हैं! फिर प्रभु ने उन्हें गोद में लिया, और उन पर हाथ रखकर उन्हें आशीष दी। निश्चित रूप से वे बालक परमेश्वर के लिए महान बने होंगे।

एक बार चेलों ने प्रभु से पूछा, ''स्वर्ग के राज्य में सबसे बड़ा कौन है?'' प्रभु ने एक छोटे बालक को लेकर उनके बीच में खड़ा किया, और उसे गोद में लेकर उनसे कहा, ''मैं तुमसे सच कहता हूँ, यदि तुम न फिरो, और बालकों के समान न बनो, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे। और जो कोई अपने आपको इस बालक के समान छोटा करेगा, वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा।''

बच्चों, आपको भी नम्र होना चाहिए। आपको भी प्रभु से बातचीत करना चाहिए। आप प्रभु से कैसे बातें कर सकते हैं? प्रार्थना करने के द्वारा। और आप परमेश्वर की बात को कैसे सुन सकते हो? परमेश्वर के वचन, बाइबल को पढ़ने के द्वारा। बच्चों जब आप बड़े हो जाएँगे तब भी आप को नम्र बनकर रहना चाहिए। आपको परमेश्वर के वचन को याद करना चाहिए।

याद करें :

मत्ती 18:4 जो कोई अपने आपको इस बालक के समान छोटा करेगा, वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा।

प्रश्न :

1. माताएँ अपने बालकों को प्रभु यीशु के पास क्यों लाईं?
2. चेलों ने उन माताओं से क्या कहा?
3. प्रभु यीशु ने क्या कहा?
4. हम परमेश्वर से कैसे बातें कर सकते हैं?
5. हम परमेश्वर की बातें कैसे सुन सकते हैं?

❊ ❊ ❊

पाठ-35

खोई हुई भेड़

(लूका 15:3-7)

मुख्य बिंदु :

1. पापी लोग खोई हुई भेड़ के समान हैं।
2. प्रभु यीशु हमारा चरवाहा हैं। वे खोए हुओं को ढूँढ़ने आए।
3. परमेश्वर प्रसन्न होते हैं जब खोई हुई भेड़ मिल जाती है।

पाठ :

प्रभु यीशु दृष्टांतों के द्वारा लोगों को सिखाते थे। दृष्टांत वह कहानी होती है, जो किसी सत्य को प्रकट करता है। कुछ लोग कुड़कुड़ाने लगे थे कि प्रभु यीशु पापियों और चुंगी लेने वालों के साथ मिलते और खाते-पीते भी हैं। प्रभु यीशु पापियों को बचाने के लिए आए। पापी वे लोग होते हैं जो परमेश्वर से दूर चले गए हैं। उन्हें परमेश्वर के पास वापस लाया जाना चाहिए। ऐसा करने के लिए प्रभु यीशु पापियों के पास गए और उनसे मित्रता की, ताकि उन्हें बचा सकें। यह समझाने के लिए प्रभु ने उनसे एक दृष्टांत कहा।

एक मनुष्य था, जिसके पास सौ भेड़ें थीं। और उसमें से एक खो गई। उस चरवाहे ने क्या किया? वह निन्नानवे को जंगल में छोड़कर, उस खोई हुई भेड़ को ढूँढ़ने निकल गया। वह उसे पहाड़ों और तराइयों में तब तक ढूँढ़ता रहा, जब तक वह मिल न गई। तब उसने बड़े आनंद से उसे कांधे पर उठा लिया। और घर में आकर मित्रों और पड़ोसियों को इकट्ठे करके कहा, ''मेरे साथ आनंद मनाओ, क्योंकि मेरी खोई हुई भेड़ मिल गई है।''

फिर प्रभु ने कहा, ''मैं तुमसे कहता हूँ, कि इसी रीति से, एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में भी स्वर्ग में इतना ही आनंद होता है, जितना कि निन्नानवे ऐसे धर्मियों के विषय में नहीं होता, जिन्हें मन

फिराने की आवश्यकता नहीं।''

जिस प्रकार चरवाहा, खोई हुई भेड़ से प्यार करता है, उसी प्रकार परमेश्वर उन लोगों से प्रेम करते हैं, जो उनसे दूर चले गए हैं। जिस प्रकार भेड़ के मिल जाने पर चरवाहा आनंद मनाता है, उसी प्रकार एक पापी के मन फिराने पर परमेश्वर आनंदित होते हैं। जिस प्रकार चरवाहे के मित्र और पड़ोसी उसके साथ आनंद मनाते हैं, उसी प्रकार स्वर्ग के दूत परमेश्वर के साथ आनंद मनाते हैं।

''अद्‌भुत प्रेम - मुझे ढूँढ़ा

अद्‌भुत लहू - मुझे खरीदा

अद्‌भुत अनुग्रह - मुझे झुण्ड में लाया''

याद करें :

लूका 19:10 क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूँढ़ने, और उनका उद्धार करने आया है।

प्रश्न :

1. लोग प्रभु यीशु पर क्यों कुड़कुड़ाए?
2. दृष्टांत किसे कहते हैं?
3. चरवाहे के पास कितनी भेड़ें थीं? उनमें से कितनी खो गईं?
4. प्रभु यीशु किसे बचाने आए?
5. खोई हुई भेड़ के मिलने पर चरवाहे ने क्या किया?

❊ ❊ ❊

पाठ–36

उड़ाऊ पुत्र

(लूका 15:11–24)

मुख्य बिंदु :

1. हमारे स्वर्गीय पिता अपने बच्चों से प्रेम करते हैं।
2. जब उनकी संतानें अनाज्ञाकारी होते हैं और पिता से दूर इस संसार के पापों में चले जाते हैं, तब वह बहुत दुखी हो जाते हैं, और उनकी वापसी की प्रतीक्षा उत्सुकता से करते हैं।
3. जब वे वापस लौटते हैं, तब पिता उन्हें अपनी बांहों में भरकर स्वीकार करते हैं।

पाठ :

पिछले पाठ में हमने उस भेड़ के विषय में सीखा था, जो खो गई थी, और फिर मिल गई। आज हम एक दृष्टांत सीखेंगे, जिसमें एक पुत्र अपने पिता से दूर जाकर, खो जाता है।

एक धनी मनुष्य के दो पुत्र थे। छोटे पुत्र ने अपने पिता से कहा, ''हे पिता, संपत्ति में से जो मेरा भाग है, वह मुझे दे दीजिए।'' पिता ने उनको अपनी संपत्ति बाँट दी। कुछ दिनों में छोटे पुत्र ने अपना सब कुछ इकट्ठा किया और एक दूर देश को चला गया, और वहाँ कुकर्म में अपनी संपत्ति उड़ा दी। इस तरह वह उड़ाऊ बन गया और निर्धन भी। तभी उस देश में बड़ा अकाल पड़ा। भोजन दुर्लभ और महंगा हो गया।

उड़ाऊ पुत्र को समझ नहीं आया कि वह क्या करे। अंततः वह किसी व्यक्ति के सूअर चराने का कार्य करने लगा। और जब भूख लगी तो उन्हीं फलियों से अपना पेट भरा, जिन्हें सूअर खाते थे। उसे किसी ने खाने को कुछ न दिया। तब वह बैठकर सोचने लगा, ''मैं कितना मूर्ख हूँ, मैंने अपना सब कुछ खो दिया।'' जब वह अपने आपे में आया, तब कहने लगा, ''मेरे पिता के कितने ही मज़दूरों को भोजन से अधिक रोटी मिलती है, और यहाँ मैं भूखा मर रहा हूँ। इसलिए अब मैं उठकर अपने पिता के

पास जाऊँगा और उससे कहूँगा, कि पिताजी, मैंने स्वर्ग के विरोध में, और तेरी दृष्टि में पाप किया है। अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊँ। मुझे अपने एक मजदूर की तरह रख ले।'' तब वह उठकर, अपने पिता के घर की ओर चला। वह भूखा, प्यासा और बुरी अवस्था में था।

उसका पिता हर रोज़ उसकी राह देखता था, और उसके वापस आने की प्रतीक्षा करता था। जब उसने अपने पुत्र को दूर से आते हुए देखा, तो उसकी तरफ दौड़कर गया, और उसे गले लगाया, और बहुत चूमा। तब पुत्र अपने पापों की क्षमा माँगने लगा, परन्तु उसके पिता ने पहले ही उसे क्षमा कर दिया था। उसने अपने सेवकों से कहा, ''झट अच्छे से अच्छा वस्त्र निकालकर उसे पहिनाओ, और उसके हाथ में अंगूठी और पाँवों में जूतियाँ पहिनाओ। और पला हुआ बछड़ा लाकर मारो, ताकि हम खाएँ और आनन्द मनाएँ। क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, अब जी गया है, खो गया था, अब मिल गया है।'' और उन्होंने आनन्द मनाया।

यह दृष्टांत हमें सिखाता है, कि स्वर्गीय पिता अपने बच्चों से प्रेम करते हैं, चाहे वे अपने पिता की आज्ञा न मानकर उनसे दूर चले जाएँ। परमेश्वर के बच्चे परमेश्वर से दूर रहकर कभी प्रसन्न नहीं रह सकते। जब वे वापस आकर अपने पापों को मान लेते हैं तब परमेश्वर उन्हें क्षमा करके उन्हें प्रसन्नता से स्वीकार करते हैं।

याद करें :

यशायाह 53:6 हम तो सबके सब भेड़ों की तरह भटक गए थे।

प्रश्न :

1. छोटे पुत्र ने पिता से क्या माँगा?
2. उसने अपनी संपत्ति का क्या किया?
3. अकाल पड़ने पर उसने क्या किया?
4. उसे पिता की और घर की याद कैसे आई?
5. उसने क्या करने का निर्णय लिया?
6. उसके पिता ने उसे कैसे स्वीकार किया?
7. उड़ाऊ पुत्र का यह दृष्टांत हमें परमेश्वर के बारे में क्या सिखाता है?

❊ ❊ ❊

पाठ-37

धनवान मनुष्य और लाजर

(लूका 16:19-31)

मुख्य बिंदु :

1. मृत्यु होने पर, कोई भी अपने साथ इस संसार से कुछ साथ लेकर नहीं जा सकता।
2. परमेश्वर पर किया हुआ विश्वास, इस जीवन में हमारी सहायता करता है, और आने वाले जीवन में अनंत आनंद लाता है।
3. हमारा चुनाव यह निर्णय करता है, कि स्वर्ग में हमें क्या प्राप्त होगा।

पाठ :

बच्चों, हमने सीखा है कि प्रभु यीशु अक्सर लोगों को दृष्टांतों के द्वारा शिक्षा देते थे। एक बार उन्होंने दो व्यक्तियों के बारे में बताया, जो एक दूसरे से एकदम भिन्न थे।

एक अत्यंत धनी पुरुष था। उसके पास सब कुछ था। बड़ा घर, अच्छे कपड़े और खाने के लिए उत्तम भोजन। परन्तु वह परमेश्वर से दूर था। उसने यह सोचा भी नहीं, कि उसे मृत्यु के पश्चात् यह सब छोड़कर जाना होगा। वह जीवन का आनंद उठाता रहा।

दूसरा पुरुष लाजर नाम का एक भिखारी था। वह बीमार और घावों से भरा हुआ था। वह उस धनवान की डेवढ़ी पर पड़ा रहता था, ताकि उसके जूठन से अपना पेट भरे। कुत्ते आकर उसके घावों को चाटते थे।

हम देखते हैं कि लाजर के पास इस संसार में कुछ भी नहीं था, परन्तु उसे परमेश्वर पर विश्वास था, और स्वर्ग जाने की आशा थी। एक दिन उसकी मृत्यु हो गई। और उसके कष्टों का भी अन्त हो गया। स्वर्गदूत आए और उसे इब्राहीम की गोद में पहुँचाया, जो आनंद और

शांति का स्थान था। कुछ समय के पश्चात् धनवान की भी मृत्यु हो गई। और वह अधोलोक में पहुँच गया। वह इतनी पीड़ा में था कि वह एक बूंद पानी की चाह करने लगा। उसने अपनी आँखें उठाई और दूर से इब्राहीम की गोद में लाजर को देखा। और उसने पुकारकर कहा, ''हे पिता इब्राहीम, मुझ पर दया करके लाजर को भेज दे, ताकि वह अपनी उंगुली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूँ।'' परन्तु इब्राहीम ने उत्तर दिया, ''हे पुत्र, स्मरण कर, कि तू अपने जीवन में अच्छी वस्तुएँ ले चुका है, और वैसे ही, लाजर बुरी वस्तुएँ। परन्तु अब वह यहाँ शांति पा रहा है, और तू तड़प रहा है। और इन सब बातों को छोड़, हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी गड़हा ठहराया गया है, कि यहाँ से कोई वहाँ नहीं जा सकता और न वहाँ से कोई यहाँ आ सकता है।''

तब उस धनवान व्यक्ति को अपने भाई स्मरण आए जो अभी भी पृथ्वी पर जीवित थे। उसने इब्राहीम से कहा, ''हे पिता, मैं तुझ से विनती करता हूँ, कि तू लाजर को मेरे भाइयों के पास पृथ्वी पर भेज दे, ताकि मेरे पाँचों भाई इस पीड़ा की जगह में न पहुँचें।'' इब्राहीम ने उत्तर दिया, ''उनके पास तो मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें हैं, वे उनकी सुनें। जो इस बात की चेतावनी देते हैं कि पाप के कारण मनुष्य को मृत्यु और अनंत दण्ड प्राप्त होगा। और यदि वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की बातें नहीं मानते, तो यदि मरे हुओं में से कोई जी भी उठे, तौभी उसकी नहीं मानेंगे।''

इस पाठ से हम सीखते हैं, कि हमें पश्चाताप करना चाहिए ताकि हमारे पाप क्षमा हो सकें। मृतक व्यक्ति के लिए की गई प्रार्थना, अथवा किसी मृतक की प्रार्थना परमेश्वर नहीं सुनते।

याद करें :

मरकुस 8:36 यदि मनुष्य सारे संसार को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा?

प्रश्न :

1. धनवान मनुष्य ने कैसे जीवन व्यतीत किया?
2. लाजर कौन था? वह कहाँ रहता था?
3. लाजर अपनी मृत्यु के पश्चात् कहाँ गया?
4. धनवान मनुष्य अपनी मृत्यु के पश्चात् कहाँ गया?
5. उसने इब्राहीम से क्या विनती की?
6. उस धनवान को क्या उत्तर मिला?
7. यह पाठ हमें क्या सिखाता है?

❈ ❈ ❈

पाठ-38

जक्कई

(लूका 19:1-10)

मुख्य बिंदु :

1. प्रभु यीशु मसीह, सही समय पर ही किसी व्यक्ति से मिलते हैं।
2. यदि आप प्रभु यीशु को ''देखने'' की चाह रखते हैं, तब प्रभु आपसे अवश्य मिलेंगे।
3. प्रभु से मिलने पर हमारा जीवन परिवर्तित हो जाएगा।

पाठ :

पिछले पाठों में हमने सीखा, कि प्रभु यीशु खोए हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने के लिए आए। आज हम उस अमीर व्यक्ति के बारे में सीखेंगे, जो परमेश्वर से दूर था, और अपने ही लोगों को लूटता था, परन्तु प्रभु यीशु से मिलने पर उसका जीवन परिवर्तित हो गया।

प्रभु यीशु यरीहो से होकर निकल रहे थे, और हमेशा की तरह एक बड़ी भीड़ उनके पीछे हो ली। चलते-चलते प्रभु उनको शिक्षा भी देते जा रहे थे। जक्कई नाम का एक धनवान था, जो चुंगी लेने वालों का मुखिया* था। वह प्रभु यीशु को देखना चाहता था। परन्तु वह नाटा था, और बड़ी भीड़ के कारण यह संभव नहीं था। अतः वह आगे दौड़कर एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया, जहाँ से प्रभु जाने वाले थे। उस स्थान पर पहुँचने पर प्रभु ने ऊपर दृष्टि करके उससे कहा, ''हे जक्कई, झट उतर आ, क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना अवश्य है।'' वह तुरंत

** चुंगी लेने वाले, रोमी सरकार के लिए, साधारण लोगों से धन एकत्र करते थे। वे हमेशा ही अधिक धन वसूल करते थे जिसका अधिकांश हिस्सा उनकी ही जेब में जाता था। इस प्रकार चुंगी लेने वाले अफसर यहूदियों को लूटते थे और यहूदी उनसे घृणा करते और उन्हें पापी मानते थे। इसी कारण यह कथन चला-''पापी और चुंगी लेने वाले''।*

उतरकर आनंद से उसे अपने घर को ले गया। यह देखकर सब लोग कुड़कुड़ाकर कहने लगे, ''वह तो पापी मनुष्य के यहाँ गया है।'' जक्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा, ''हे प्रभु, देख मैं अपनी आधी संपत्ति कंगालों को देता हूँ, और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है, तो उसे चौगुना वापस कर देता हूँ।'' प्रभु यीशु इतने खुश हुए, कि उन्होंने उससे कहा, ''आज इस घर में उद्धार आया है। क्योंकि यह भी इब्राहीम का एक पुत्र है। क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।''

हम जानते हैं कि इब्राहीम उन लोगों का ''पिता'' कहलाता है, जो परमेश्वर पर विश्वास करते हैं।

जिस प्रकार जक्कई ने प्रभु यीशु को अपने घर में स्वीकार किया, उसी प्रकार हमें प्रभु को अपने हृदय में स्वीकार करना चाहिए। जक्कई ने प्रभु को अपने हृदय में भी स्वीकार किया था, जिसके परिणामस्वरूप उसका जीवन परिवर्तित हो गया था। यह परिवर्तन उसके जीवन में तुरंत ही फल लाया। इसी कारण जक्कई ने कहा, कि मैं अपनी संपत्ति का आधा कंगालों को देता हूँ, और जिसका अन्याय करके लिया है, उसे चार गुना वापस कर देता हूँ। हम परमेश्वर की संतान हैं, और प्रभु यीशु हमारे अंदर वास करते हैं। इस कारण हमारा स्वभाव भी वैसा होना चाहिए जैसा प्रभु यीशु का था।

याद करें :

इफिसियों 2:8 विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है।

प्रश्न :

1. जक्कई पेड़ पर क्यों चढ़ा?
2. यहूदी लोग जक्कई से क्यों घृणा करते थे?
3. प्रभु यीशु से मुलाकात करने के पश्चात् जक्कई के जीवन में क्या परिवर्तन आया?
4. हमारा जीवन कैसे परिवर्तित हो सकता है?
5. यदि प्रभु यीशु आपसे कहें, कि वे आपके दिल में आना चाहते हैं, तो आपका उत्तर क्या होगा?

❊ ❊ ❊

पाठ–39

क्रूस

(मत्ती अध्याय 26–27)

मुख्य बिंदु :

1. इस पृथ्वी पर अपने जीवन के द्वारा प्रभु यीशु ने अपने पिता को संसार पर प्रकट किया।
2. अपने शब्दों के द्वारा प्रभु यीशु ने प्रकट किया कि परमेश्वर संसार से क्या कहना चाहते हैं।
3. क्रूस पर प्रभु यीशु की मृत्यु समस्त संसार के लिए थी।

पाठ :

बच्चों, हमने सीखा था, कि किस प्रकार परमेश्वर ने अपने पुत्र प्रभु यीशु को इस संसार में भेजा था, और प्रभु ने एक शिशु के रूप में जन्म लिया था। मनुष्यों के बीच में रहकर प्रभु यीशु ने अपने पिता की इच्छा को पूरा किया। तीन वर्षों तक प्रभु यीशु लोगों के बीच में रहे और बहुत से आश्चर्यकर्म किए। उन्होंने रोगियों को चंगा किया और मृतकों को जीवित किया, और इस प्रकार परमेश्वर के प्रेम और सामर्थ्य को प्रकट किया।

अनेकों ने प्रभु पर विश्वास किया, क्योंकि वे जानते थे कि वह मसीह हैं जिसका वायदा दिया गया था। प्रभु यीशु के पीछे एक भीड़ हमेशा रहती थी जिसके कारण महायाजक और शासक प्रभु से जलते थे। वे प्रभु का दोष ढूँढ़ने का प्रयत्न करते रहते थे, परन्तु कभी कोई दोष न मिला। इस कारण वे प्रभु से और भी जलन रखते थे और क्रोधित थे। उन्होंने प्रभु को मार डालने की योजना बनाई। यहूदा नामक प्रभु का एक चेला था, जो लालची और धन का लोभी था। उन्होंने उसे चाँदी के तीस सिक्के देने का वादा किया। यहूदा ने मान लिया कि उस धन के बदले, वह प्रभु को पकड़वाने में उनकी सहायता करेगा। तब से यहूदा उस

अवसर की ताक में रहने लगा, कि प्रभु यीशु को पकड़वा दे, जब भीड़ उनके साथ न हो।

देर रात को गतसमनी के एक बगीचे में प्रभु यीशु प्रार्थना कर रहे थे, और उनके शिष्य पास ही एक स्थान पर सो रहे थे, जब महायाजकों और पुरनियों की ओर से एक बड़ी भीड़ तलवारें और लाठियाँ लेकर आई ताकि प्रभु को पकड़ लें। यहूदा भी उनके साथ था। उसने आकर प्रभु यीशु को चूम लिया, ताकि सिपाहियों को पता चल जाए कि किसे पकड़ना है। प्रभु को यहूदी पुरनियों और महायाजक के पास ले जाया गया, और अंत में पीलातुस के पास लाया गया। परन्तु पीलातुस ने प्रभु में कोई दोष नहीं पाया। फिर भी यहूदी अगुओं के ज़ोर देने के कारण पीलातुस ने प्रभु को क्रूस पर चढ़ा देने के लिए सौंप दिया। सिपाहियों ने काँटों का मुकुट बनाकर प्रभु के सिर पर रखा और उसका मज़ाक उड़ाया। उन्होंने प्रभु को बैंजनी वस्त्र पहिनाए और उसके आगे घुटने टेककर उसे ठट्ठे में उड़ाने लगे, कि हे यहूदियों के राजा, नमस्कार। और उन्होंने प्रभु को मारा।

सुबह के लगभग नौ बजे प्रभु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए गुलगुता नामक स्थान पर ले जाया गया। प्रभु को फिर से उनके वस्त्र पहिनाए गए। वे स्वयं अपने क्रूस को उठाकर खोपड़ी नामक स्थान तक ले गए जहाँ उन्हें क्रूस पर चढ़ाया गया। प्रभु यीशु के साथ ही दो डाकू, एक उसके दहिने और एक बाएं क्रूसों पर चढ़ाए गए।

दोपहर से लेकर तीसरे पहर तक उस सारे देश में अन्धेरा छाया रहा। तीसरे पहर के समय प्रभु ने बड़े शब्द से पुकार कर कहा, ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' अंत में प्रभु यीशु ने कहा, ''हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ।'' और यह कहकर प्राण छोड़ दिए। इस प्रकार प्रभु यीशु ने हम सबके लिए अपनी जान दी।

याद करें :

यूहन्ना 10:11 अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिए अपना प्राण देता है।

प्रश्न :

1. परमेश्वर ने अपने पुत्र को इस संसार में क्यों भेजा?
2. महायाजक और शासक प्रभु यीशु से क्यों जलते थे?
3. प्रभु यीशु को किसने पकड़वाया? और क्यों?
4. प्रभु को पकड़वाने के लिए यहूदा को कितना धन प्राप्त हुआ?
5. प्रभु यीशु को किस स्थान पर क्रूस पर चढ़ाया गया?
6. जब प्रभु क्रूस पर थे, तब दोपहर से लेकर तीसरे पहर तक क्या हुआ?
7. क्रूस पर से प्रभु यीशु ने जो कुछ कहा, उसमें से कुछ शब्द बताओ?

❊ ❊ ❊

पाठ-40

पुनरुत्थान

(मत्ती 28:1-20)

मुख्य बिंदु :

1. पुनरुत्थान की भविष्यद्वाणी की गई थी।
2. प्रभु यीशु ने स्वयं भी अपने पुनरुत्थान के विषय में बताया था।
3. स्त्रियों ने और शिष्यों ने कब्र को खाली पाया।
4. प्रभु यीशु फिर से आएँगे

पाठ :

बच्चों, हमने सीखा था कि प्रभु यीशु के जन्म के सैकड़ों वर्ष पूर्व ही भविष्यद्वक्ताओं ने लिखा था, कि उद्धारकर्ता जिसकी प्रतिज्ञा की गई है, उसका जन्म बैतलहम में होगा। प्रभु यीशु के जीवन, मृत्यु एवं पुनरुत्थान के बारे में भी भविष्यद्वाणियाँ हुईं। सभी भविष्यद्वाणियाँ पूरी हुईं। अपने जी उठने के विषय में स्वयं प्रभु ने कहा था, जो सुसमाचारों में लिखा हुआ है। तथापि, उनके शिष्यों ने उस बात पर पूर्णतः विश्वास नहीं किया, और प्रभु की मृत्यु पर विलाप किया।

मरियम मगदलीनी और योसेस की माता मरियम और सलोमी सप्ताह के पहले दिन कब्र पर आईं ताकि प्रभु के शव पर सुगंधित वस्तुएँ लगाएँ। उन्हें प्रभु यीशु के पुनरुत्थान की उम्मीद नहीं थी। परन्तु उस रविवार की सुबह क्या हुआ?

उस दिन, भोर होने से पहले ही, एक भूकंप हुआ। स्वर्ग से एक दूत ने आकर कब्र पर से उस भारी पत्थर को हटा दिया था। जब स्त्रियाँ अपने साथ सुगंध द्रव्य लेकर कब्र पर पहुँचीं, तब उन्होंने देखा कि कब्र के द्वार पर से पत्थर लुढ़का हुआ है। और कब्र खाली है। उन्होंने वहाँ एक स्वर्गदूत को देखा, जिसने उनसे कहा, ''वह यहाँ नहीं है, परन्तु

अपने वचन के अनुसार जी उठा है; आओ यह स्थान देखो जहाँ, प्रभु पड़ा था।'' स्त्रियाँ भय और बड़े आनंद के साथ कब्र से शीघ्र लौटकर प्रभु के शिष्यों को समाचार देने के लिए दौड़कर गईं। तथापि, मरियम रुकी रही और प्रभु उसके सामने प्रकट हुए। पतरस और यूहन्ना यह समाचार सुनकर कब्र पर गए, ओर उसे खाली पाया। परंतु कपड़ों और अंगोछे को अपने स्थान पर पड़ा हुआ देखा। तब उनको विश्वास करना पड़ा कि प्रभु वास्तव में जी उठे हैं। बाद में, प्रभु यीशु बहुतों के सामने प्रकट हुए। प्रभु ने उनसे कहा, ''जैसा मैंने पहले ही तुमसे कहा था, मुझे अपने पिता के पास जाना अवश्य है। और मेरे फिर से आने तक तुम मेरा गवाह होगे।'' चालीस दिन के बाद प्रभु अपने शिष्यों को लेकर जैतून के पहाड़ पर गए, और वहाँ वह उनकी आँखों के सामने स्वर्ग पर उठा लिए गए।

याद करें :

प्रकाशितवाक्य 1:18 मैं मर गया था, और अब देख, मैं युगानुयुग जीवता हूँ।

प्रश्न :

1. प्रभु यीशु की मृत देह पर लगाने के लिए सुगंध द्रव्य कौन लाया?
2. पत्थर किसने लुढ़काया?
3. अपने पुनरुत्थान के पश्चात्, प्रभु यीशु सबसे पहले किसके सामने प्रकट हुए?
4. पतरस और यूहन्ना ने कब्र में क्या देखा?
5. प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों से क्या करने को कहा?
6. प्रभु यीशु कहाँ से स्वर्ग पर उठाए गए?

❊ ❊ ❊